श्री शिवपुराण

※ प्रथम खण्ड ※

शिवपुराण—महात्म्यम्

※ शिवपुराण—महत्व ※

हे हे सूत महाप्राज्ञ सर्वसिद्धान्तवित्प्रभो ।
आख्याहि मे कथासारं पुराणानां विशेषतः ।१।
सदाचारश्च सद्भक्तिर्विवेको वर्द्धते कथम् ।
स्वविकारनिरासश्च सज्जनैः क्रियते कथम् ।२।
जीवाश्च सुरतां प्राप्ताः प्रायो घोरे कलाविह ।
तस्य संशोधने किं हि विद्यते परमायनम् ।३।
यदस्ति वस्तु परमं श्रेयसां श्रेय उत्तमम् ।
पावनं पावनानां च साधनं यद्वदाधुना ।४।
येन तत्साधनेनाशु शुद्धचत्यात्मा विशेषतः ।
शिवप्राप्तिर्भवेत्तात सदा निमलचेतसः ।५।

शौनकजी ने कहा—हे सूतजी! हे सर्वसिद्धान्तो के ज्ञाता महा-पंडित! आप विशेषकर पुराणों की कथा का सार मेरे प्रति कहिये ।१। सदाचार, भक्ति के द्वारा विवेक की वृद्धि किस प्रकार होती है और सज्जन अपने विकारों को किस प्रकार शान्त करते हैं सो कहिये ।२। इस घोर कलि-काल में प्राणी असुरत्व को प्राप्त हुये हैं, उनका शोधन किस प्रकार हो सो आप कहने की कृपा करें ।३। जो वस्तु अत्यन्त श्रेष्ठ और कल्याण देने वाली है तथा जो पवित्रों से भी पवित्र है उत्तम साधन रूप है सो आप मुझसे कहें ।४। आत्मा जिस साधन के द्वारा शुद्ध हो जाता है और सदा निर्मल चित्त वाले व्यक्तियों को भगवान् शिव प्राप्त हो जाते हैं ।५।

धन्यस्त्वं मुनिशार्दूल श्रवणप्रीतिलालसः ।
अतो विचार्य्य सुधिया वच्मि शास्त्रं महोत्तमम् ।६।
सर्वसिद्धांतनिष्पन्नं भक्त्यादिकविवर्द्धनम् ।
शिवतोषकरं दिव्यं शृणु वत्स रसायनम् ।७।
कलिव्यालमहात्रासविध्वंसकरमुत्तमम्
शैवं पुराणं परमं शिवेनोक्तं पुरा मुने।८।
जन्मान्तरे भवेत्पुण्यं महद्यस्य सुधीमत ।
तस्य प्रीतिर्भवेत्तत्र महाभाग्यवतो मुने ।९।
एतच्छिवपुराणं हि परमं शास्त्रमुत्तमम् ।
शिवरूपं क्षितौ ज्ञेय सेवनीयं च सर्वथा ।१०।
पठनाच्छ्रवणादस्य भक्तिमान्नरसत्तमः ।
सद्यः शिवपदप्राप्तिं लभते सर्वसाधनात् ।११।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन काक्षितं पठनं नाभिः ।
तथास्य श्रवणं प्रेम्णा सर्वकामफलप्रदम् ।१२।

सूतजी ने कहा—हे मुनिवरों ! तुम्हारी प्रीति कथा सुनने में है । इस लिए तुम धन्य हो । इसी कारण मैं बुद्धिपूर्वक विचार करके यह श्रेष्ठ शास्त्र कहता हूँ ।६। यह सर्व सिद्धान्त से सम्पन्न भक्ति आदि की वृद्धि करने वाला तथा शिवजी का सन्तोष करने वाला परम दिव्य रसायन स्वरूप है ।७। कालरूपी महासर्प का विध्वंसक यह परम श्रेष्ठ शिवपुराण है । हे मुने ! यह भगवान् शिव के द्वारा कहा गया है ।८। जिसने जन्म जन्मान्तर अत्यन्त श्रेष्ठ और पुण्यकर्म किये हों, उस मनुष्य की अत्यन्त प्रीति इस महापुराण के श्रवण में होती है ।९। यह शिवपुराण परमश्रेष्ठ शास्त्र है । पृथिवी में इस शिव-स्वरूप ही जानकर श्रद्धापूर्वक इसका सदा सेवन करे ।१०। इसके पढ़ने और श्रवण करने से मनुष्य शीघ्र ही श्रेष्ठ भक्ति से सम्पन्न होता और उसे शिव-साधन रूप परम पद की शीघ्र प्राप्ति होती है ।११। इसलिये मनुष्यों को इसे सब प्रकार से पढ़ना ही उचित है । क्योंकि इसके प्रेमपूर्वक पढ़ने से सभी कामनाओं की पूर्ति होती है ।१२।

पुराणश्रवणाच्छम्भोर्निष्पापो जायते नरः ।
भुक्त्वा भोगान्सुविपुलञ्छिवलोकमवाप्नुयात् ।१३।
राजसूयेन यत्पुण्यमग्निष्टोमशतेन च ।
तत्पुण्यं लभते शम्भोःकथाश्रवणमात्रतः ।१४।
ये शृण्वन्ति मुने शैवं पुराणं शास्त्रमुत्तमम् ।
ते मनुष्या न मन्तव्या रुद्रा एव न संशयः ।१५।
शृण्वतां तत्पुराणं हि तथा कीर्तययां च तत् ।
पादाम्बूजरजांस्येव तीर्थानि मुनयो विदुः ।१६।
गन्तुं निः श्रेयस स्थानं येऽभिवाञ्छंति देहिनः ।
शैवम्पुराणममलं भक्त्या शृणुवन्तु ते सदा ।१७।
सदा श्रोतुं यद्यशक्तो भवेत्स मुनिसत्तम् ।
नियतात्मा प्रतिदिनं शृणुयाद्वा मुहूर्तकम् ।१८।
यदि प्रतिदिनं श्रोतुमशक्तो मानवो भवेत् ।
पुण्यं मासादिषु मुने श्रूयाच्छिवपुराणकम् ।१९।

शिव पुराण का श्रवण करने से मनुष्य सभी पापों से छूट जाता और अनेक भोगों का उपभोग करने पर अन्त में उसे शिवलोक की प्राप्ति होती है ।१३। राजसूय यज्ञ या सौ अग्निष्टोम से जो पुण्य प्राप्त होता है, वह पुण्य शिवजी की कथा सुनने मात्र से ही मिल जाता है ।१४। हे मुने ! श्रेष्ठ शिव पुराण का जो मनुष्य श्रवण करते हैं, वे मनुष्य नहीं, वरन् साक्षात् रुद्र रूप ही हैं, इसमें सन्देह नहीं है ।१५। इसके सुनने वालों और कीर्तन करने वालों की चरणरज भी तीर्थ स्वरूप हैं, ऐसा मुनि-जनों का कथन है ।१६। कल्याणप्रद स्थान की कामना वाले जीवों को नित्य शिवजी के निर्मल पुराण का श्रवण करना चाहिए ।१७। यदि सब काल सुनने में समर्थ न हो तो नियमपूर्वक दो घड़ी ही इसे सुने ।१८। यदि प्रति दिन सुनने में समर्थन न हो तो पवित्र महीनों में श्रवण करे ।१९।

मुहूर्तं वा तदर्द्धं वा तदर्द्धं वा क्षणं च वा
ये शृण्वन्ति पुराणं तन्न तेषां दुर्गतिर्भवेत् ।२०।

तत्पुराणं च शृण्वानः पुरुषो यो मुनीश्वर ।
स निस्तरति संसारं दग्ध्वा कर्ममहाटवीम् ।२१।
तत्पुण्यं सर्वदानेषु सर्वयज्ञेषु वा मुने ।
शम्भोः पुराणश्रवणात्तफलं निश्चल भवेत् ।२२।
विशेषतः कलौ शैवपुराण श्रवणादृते ।
परो धर्मो न पुंसां हि मुक्तिसाधनकत्मुने ।२३।
पुराणश्रवणं शम्भोर्नामसंकीर्तनं तथा ।
कल्पद्रु मफल सम्यङ्मनुष्याणां न संशयः ।२४।
कलौ दुर्मेधसां पुंसां धर्माचारोज्झितात्मनाम् ।
हिताय विदधे षम्भुः पुराणाख्यं सुधारसम् ।२५।
एकोऽजरामरः स्याद्वै पिबन्नेवामृतं पुमान् ।
शम्भोः कथामृतं कुर्यात्कुलमेवाजरामरम् ।२६।

जो व्यक्ति एक मुहुर्त, उससे आधा या क्षणमात्र को भी सुनते हैं, वे दुर्गति को प्राप्त नहीं होते ।२०। हे मुनीश्वर ! इस महा पुराण को जो प्राणी सुनते हैं, वे कर्म रूपी विकराल वन को भस्म कर संसार-सागर से पार हो जाते हैं ।२१। हे मुने ! सम्पूर्ण यज्ञों से जो फल प्राप्त होता है, वह शिव पुराण के सुनने से अवश्य मिल जाता है ।२२। विशेषकर कलि काल में मुक्ति का साधन रूप, शिवपुराण के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म नहीं है ।२३। सुनना या उनका नाम संकीर्तन करना, मनुष्यों के लिये कल्प वृक्ष के समान फलदायी है, इसमें सन्देह नहीं है ।२४। कलियुग के जिन दुर्मेधी पुरुषों ने अपने धर्म को छोड़ दिया है, उनके लिए भी यह अमृत रूप हित करने वाला है ।२५। इस अमृत को जो पुरुष पीता है, वह अजर अमर हो जाता है और शिवजी के कथा-मृत से कुल को भी अजर अमर कर देता है ।२६।

सदा सेव्या सदा सेव्या सदा सेव्या विशेषतः ।
एतच्छिवपुराणस्य कथा परमपावनी ।२७।
एतच्छिवपुराणस्य कथाश्रवणमात्रतः ।
किं ब्रवीमि फलं तस्य शिवश्चित्तं समाश्रयेत् ।२८।

एतच्छिवपुराणस्य कथा भवति यद्गृहे ।
तीर्थभूतं हि तद्गेहं वसतां पापनाशनम् ।२९।
अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
कलां शिवपुराणस्य नार्हन्ति खलु षोडशीम् ।३०।
गंगाद्याः पुण्यनद्यश्च सप्तपुर्य्यो गया तथा ।
एतच्छिवपुराणस्यसमतां यांति न क्वचित् ।३१।
नित्यं शिवपुराणस्य श्लोकं श्लोकार्द्धमेव च ।
स्वमुखेन पठेद्भक्त्या यदीच्छेत्परमां गतिम् ।३२।
एतच्छिवपुराणं यो वाचयेदर्थतोऽनिशम् ।
पठेद्वा प्रीतितो नित्यं स पुण्यात्मा न संशयः ।३३।

विशेशकर इसका सर्वदा सेवन करे । इसकी कथा परम पवित्र करने वाली है ।२७। इस कथा के सुनने मात्र से ही जो फल प्राप्त होता है, उसे मैं क्या कहूं ? शिवजी में अपने मन को समर्पण करदे ।२८। जिस गृह में शिवपुराण की कथा होती है, वह साक्षात् तीर्थ के समान है, उसमें निवास करने से पापों का नाश हो जाता है ।२९। हजार अश्वमेध और सौ वाजपेय यज्ञ भी शिवपुराण की सोलहवीं कला के समान नहीं है ।३०। सहस्र गङ्गा आदि सप्त नदी, सप्तपुरी तथा गया भी इस की समता नहीं कर सकतीं ।३१। परमगति की कामना वाले पुरुष को भक्तिपूर्वक नित्यप्रति शिवपुराण का एक या आधे श्लोक का पाठ करना चाहिये ।३२। इस का जो पुरुष भक्तिपूर्वक पाठ करता और नित्य श्रवण करता है, उसके पुण्यात्मा होने में सन्देह नहीं है ।३३।

एतच्छिवपुराणं यः पूजयेन्नित्तमादरात् ।
स भुक्त्वेहाखिलान्कामानंते शिवपदं लभेत् ।३४।
एतच्छिवपुराणस्य कुवन्नित्यमतन्द्रितः ।
पट्टवस्त्रादिना सम्यक् सत्कारं स सुखी सदा ।३५।
शैवं पुराणममलं शैवसर्वस्वमादरात् ।
सेवनीयं प्रयत्नेनऽपरत्रेह सुखेप्सुना ।३६।
चतुवर्गप्रदं शैवं पुराणममलं परम् ।

श्रोतव्यं सर्वदा प्रीत्या पठितव्यं विशेषतः ।३७।
देवेतिहासशास्त्रेषु परं श्रेयस्करं महत् ।
शैवं पुराणं विज्ञेयं सर्वथा हि मुमुक्षिभिः ।३८।
शैवंपुराणमिदमात्मविदांवरिष्ठं सेव्यंसदापरमवस्तुसतांसमर्च्यम् ।
तापत्रयाभिशमनंसुखदंसदैवप्राणप्रियं विधिहरीशमुखामराणाम् ।।
वन्दे शिवपुराणं हि सर्वदाऽहं प्रसन्नधीः ।
शिवः प्रसन्नतां यायाद्ददद्यात्स्वपदयो रतिम् ।४०।

इस का आदर पूर्वक नित्य प्रति पूजन करने वाले मनुष्य सभी कामनाओं को भोग कर अन्त में शिवपद को प्राप्त होते हैं ।३४। नित्यप्रति निरालस्य होकर इसका पाठ करने से तथा नित्य पट्ट वस्त्रादि से सत्कार करने से सर्वदा सुख की प्राप्ति होती है ।३५। यह अत्यन्त स्वच्छ एवं सर्वस्व है । जिसे दोनों लोकों में सुख प्राप्ति की इच्छा हो उसे आदर पूर्वक इसका पाठ करना चाहिए ।३६। यह निर्मल शिवपुराण चतुर्वर्ग का दाता है । इसका पाठ एवं श्रवण सदा प्रीतिपूर्वक करना चाहिए ।३७। वेद, इतिहास तथा शास्त्रों में यह परम श्रेय प्रदायक है इसलिये मुमुक्ष जनों को सदा शिव पुराण का ज्ञान आवश्यक है ।३८। आत्म ज्ञानियों के लिये यह शिवपुराण अत्यन्त उत्तम है । पपम वस्तु सदा सेवनीय और सत्पुरुषों को पूजनीय है । त्रिताप नाशक, सुखदायक है तथा ब्रह्मा, विष्णु और देवतागणों के लिये प्राणों के समान प्रिय है ।३९। मैं प्रसन्न होकर शिवपुराण को सदा प्रणाम करता हूं । शिवजी इसके द्वारा प्रसन्न होकर अपने चरणों की प्रीति मुझे प्रदान करें ।४०।

देवराजमुक्तिवर्णन

ये मानवाः पापकृतो दुराचाररताः खलाः ।
कामादिनिरता नित्यं तेऽपि शुद्धचन्त्यनेन वै ।१।
ज्ञानयज्ञः परोऽयं वै भुक्तिमुक्तिप्रदः सदा ।
शोधनः सर्वपापानां शिवमन्त्रोपकारकः ।२।
तृष्णाकुलाः सत्यहीनाः पितृमातृविदूषकाः ।
दाम्भिका हिंसका ये च तेऽपि शुद्धचन्त्यनेन वै ।३।

स्ववर्णाश्रमधर्मेभ्यो वर्जिता मत्सरान्विताः ।
ज्ञानयज्ञेन तेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।४।
छलच्छद्मकरा ये च ये च क्रूराः सुनिर्दयाः ।
ज्ञानयज्ञेन तेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।५।
ब्रह्मस्वपुष्टाः सततं व्यभिचाररताश्च ये ।
ज्ञानयज्ञेन तेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।६।
सदा पापरता ये च ये शठाश्च दुराशयाः ।
ज्ञानयज्ञेन तेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।७।
मलिना दुर्धियोऽशान्ता देवताद्रव्यभोजिनः ।
ज्ञानयज्ञेन तेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।८।

सूतजी ने कहा—जो मनुष्य पापी, दुराचार, कामादिक से डूबे हुये हैं, वे भी इसके द्वारा शुद्ध हो जायेंगे ।१। यह परम भुक्ति और मुक्ति का दाता ज्ञान यज्ञ है। सब पापों का शोधनकर्त्ता और शिवजी का संतोष कराने में समर्थ है ।२। तृष्णा और व्याकुल और सत्य से हीन तथा माता पिता की हंसी उड़ाने वाले एवं हिंसक मनुष्य भी इसके द्वारा सुधर जाते हैं ।३। वर्णाश्रम धर्म से रहित तथा मत्सर युक्त प्राणी भी कलिकाल में इस ज्ञान यज्ञ के द्वारा संसार सागर के पार हो जायेंगे ।४। जो पुरुष छल करने वाले, क्रूर एवं निर्दय स्वभाव के हैं वे भी कलिकाल में इस ज्ञान यज्ञ के द्वारा पार हो जायेंगे ।५। जो व्यक्ति ब्राह्मणों के धन के द्वारा पुष्ट हुए तथा निरन्तर व्यभिचार कर्म में लगे रहते हैं, वे भी इस ज्ञान यज्ञ के प्रभाव से तर जायेंगे ।६। जो सदा पाप कर्म में रत, शठ एवं दुराशा से युक्त हैं वे भी कलियुग से इस ज्ञान यज्ञ के द्वारा पार हो जायेंगे ।७। मलीन एवं बुरी बुद्धि वाले अशान्त तथा देवताओं के द्रव्य को हड़पने वाले मनुष्य भी कलियुग में इस ज्ञान यज्ञ के द्वारा पार हो जायेंगे ।८।

।। चंचुला वैराग्य वर्णन ।।

शृणु शौनक वक्ष्यामि त्वदग्रे गुह्यमप्युत ।
यतस्त्वं शिवभक्तानामग्रणीर्वेदवित्तमः ।१।

समुद्रनिकटे देशे ग्रामो बाष्कलसंज्ञकः ।
बसन्ति यत्र पापिष्ठा वेदधर्मोज्झिता जनाः ।२।
दुष्टा दुर्विषयात्मानो निर्दैवा जिह्मवृत्तयः ।
कृषीवलाः शस्त्रधराः परस्त्रीभोगिनः खलाः ।३।
ज्ञानवैराग्यसद्धर्म न जानन्ति परं हिते ।
कुकथाश्रवणाढ्येषु नि रताः पशुबुद्धयः ।४।
अन्ये वर्णाश्च कुधियः स्वधर्मविमुखाः खलाः ।
कुकर्मनिरता नित्यं सदा विशयिणश्चते ।५।
स्त्रियः सर्वाश्च कुटिलाः स्वैरिण्यः पापलालसाः ।
कुधियो व्यभिचारिण्यः सद्व्रताचारवर्जिताः ।६।
एवं कुजनसंवासे ग्रामे बाष्कलसंज्ञिते ।
तत्रैको बिन्दुगोनाम विप्र आसीन्महाधमः ।७।

सूतजी ने कहा—हे शौनक ! मैं तुमसे अत्यन्त गुह्य कथा कहता हूं, क्योंकि तुम शिव भक्तों में सर्व प्रथम ही ।१। समुद्र के निकट एक देश में बाष्कल नामक ग्राम था, उसमें वेद-धर्म से विमुख पापीजन रहते थे ।२। दुष्ट, दुर्विषयी तथा कुटिल वृत्ति वाले, कृषि कर्म में लगे हुए, शस्त्र बल पर निर्भर रहने वाले और पर-स्त्री भोगी थे ।३। वे ज्ञान-वैराग्य स्वरूप अपने धर्म से अज्ञान, पशुबुद्धि व्यक्ति बुरी वार्ता सुनने में ही रुचि रखते थे, क्योंकि उनकी बुद्धि पशु से समान थी ।४। अन्य वर्ण के लोग भी कुबुद्धि वाले थे । सदा अपने धर्म के विमुख रहते और विषय भोगों में रत तथा कुकर्म करने वाले थे ।५। सभी स्त्रियाँ स्वैरिणी, कुटिल और पापकर्म की इच्छा वाली थीं । सत् व्रत और आचार से रहित तथा व्यभिचारिणी थीं ।६। बुरे व्यक्तियों वाले उस ग्राम में बिदुन नामक अत्यन्त अधर्मी ब्राह्मण भी निवास करता था ।७।

स दुरात्मा महापापी सुदारोऽपि कुमार्गगः ।
वेश्यापतिर्बभूवाथ कामाकुलितमानसः ।८।
स्वपत्नीं चंचुलां नाम हित्वा नित्य सुधर्मिणीम् ।
रेमे स वेश्यया दुष्टः स्मरबाणप्रपीडितः ।९।

एवं कालो व्यतीयाय महास्तस्य कुकर्मणः ।
सा स्वधर्मभयात्क्लेशात्स्मरार्तापि च चंचुला ।१०।
अथ तस्याङ्गना सापि प्ररूढनवयौवना ।
अविषह्यस्मरावेशा स्वधर्माद्विरराम ह ।११।
जारेण संगता रात्रौ रेमे पापेन गुप्ततः ।
पतिदृष्टिं वञ्चयित्वा भ्रष्टसत्वा कुमार्गगा ।१२।
कदाचित्तां दुराचारां स्वपत्नीं चंचुलां मुने ।
जारेण संगतां रात्रौ ददर्श स्मरविह्वलाम् ।१३।
दृष्ट्वा तां दूषितां पत्नीं कुकर्मासक्तमानसाम् ।
जारेण संगतां रात्रौ क्रोधाद्द्रुदाव वेगतः ।१४।

वह अत्यन्त पापी, दुरात्मा और स्त्री सहित कुमार्ग पर चलने वाला, काम से व्याकुल होकर वेश्या का पति बना ।८। वह चंचुला नामक से अपनी पत्नी का त्याग कर काम-बाण से पीड़ित होकर वेश्या के साथ रहने लगा ।९। इस इकार उस कुकर्मी को बहुत समय व्यतीत हो गया। उसकी पत्नी चंचुला अपने धर्म और क्लेश का भय होते हुए भी काम से आक्रान्त हो गई ।१०। वह अत्यन्त तरुणाई को प्राप्त थी, उसने कामदेव से महान् पीड़ित होकर अपने धर्म का त्याग कर दिया ।११। जार की संगति में अपने पति की दृष्टि बचाकर रहने लगी। वह अपने सत से भ्रष्ट तथा कुमार्ग-गामिनी हो गई ।१२। एक समय उसके पति ने उस दुराचारिणी को रात्रि के समय जार के साथ देख लिया ।१३। वह उस कुमार्ग गामिनी दुष्टा को जार के साथ रमण करती देखकर अत्यन्त क्रोध पूर्वक उसकी ओर दौड़ा ।१४।

तमागतं गृहे दुष्टमाज्ञाय बिन्दुगं खलः ।
पलायितो द्रुतं जारो वेगतश्छद्मवान्स वै ।१५।
अथ स बिन्दुगः पत्नीं गृहीत्वा सुदुराशयः ।
मुष्टिबन्धेन संतर्ज्य पुनःपुनरताडयत् ।१६।
सा नारी ताडिता भर्त्रा चंचुला स्वैरिणी खला ।
कुपिता निर्भया प्राह स्वपतिं बिन्दुगं खलम् ।१७।

भवान्प्रतिदिनं कामं रमते वेश्यया कुधीः ।
मां विहाय स्वपत्नीं च युवतीं पतिसेविनीम् ।१८।
रूपपत्या युवत्याश्च कामाकुलितचेतसः ।
विना पति विहारं स्यात्का गतिर्मे भवान्वदेत् ।१९।
अहं महारूपवती नवयौवनविह्वला ।
कथं सहे कामदुःखंतव सङ्गं विनाऽऽर्तधीः ।२०।
इत्युक्तः स तया मूर्खो मूढधीर्ब्राह्मणोऽधमः ।
प्रोवाच बिन्दुगः पापो स्वधर्मविमुखः खल ।२१।

पति को रात्रि के समय घर में आया देखकर स्त्री ने जार को संकेत किया और वह छली .हाँ से भाग गया ।१५। तब बिन्दुग ने उसे पकड़ लिया और मुष्टिकाप्रहार से बारम्बार मारने लगा ।१६। अपने पति के द्वारा पिटी हुई चंचुला क्रोध ले भय-रहित होती हुई इस प्रकार कहने लगी ।१७। चंचुला बोली—आप जो नित्यप्रति वेश्य के प्रेम में फँसे रहते हो और मैं नित्यप्रति तुम्हारी सेवा करती हूँ। तुम मेरा त्याग करते हो ।१८। बताओ जो सौन्दर्यमयी काम से व्याकुल है, उसकी पति से रमण करने केबिना क्या गति होगी ? ।१९। मैं अत्यन्त रूपवती, नवयौवन से युक्त तथा काम से व्याकुल हूं। तुम्हारे साथ रमण किए बिना मैं काम का सन्ताप किस प्रकार सहन कर सकती हूँ ? ।२०। सूतजी ने कहा—चंचुला के ऐसा कहने पर ब्राह्मणों में नीच एवं अपने धर्म से हीन मति वाले पापी बिन्दुग ने उससे कहा ।२१।

सत्यमेतत्त्वयोक्तं हि कामव्याकुलचेतसा ।
हितं वक्ष्यामि तस्मात्ते शृणु कांते भयं त्यज ।२२।
जारैर्विहर नित्यं त्वं चेतसा निर्भयेन व ।
धनमाकर्ष तेभ्यो हि दत्त्वा तेभ्यः परां रतिम् ।२२।
तद्धनं देहि सर्वं मे वेश्यासंसक्त चेतसः ।
महत्स्वार्थं भवेन्नूनं तवापि च ममापि च ।२४।
इति भर्तृवचः श्रुत्वा चंचुला तद्वधूश्य सा ।
तथेपि भर्तृ बचनं प्रतिजग्राह हृष्टधीः ।२५।

कृत्वैवं समयं तौ वै दम्पती दुष्टमानसौ ।
कुकर्मनिरतौ जातो निर्भयेन कुचेतसा ।२६।
एवं तयोस्तु दम्पत्योर्दुराचारप्रवृत्तयोः ।
महान्कालो व्यतीयाय निष्फलो मूढचेतसोः ।२७।

विन्दुग ने कहा—हे काम से व्याकुल चित्त वाली ! मैं हित की बात कहता हूं, उसे भय छोड़कर सुन ।२२। तू निर्भय मन से जार के साथ समागम कर, परन्तु उसे प्रसन्न करके धन भी तो प्राप्त कर २३। और उस सम्पूर्ण धन को मुझ वेश्या के साथ गमन करने वाले अपने पति को दे दे । इस कार्य में मेरा और तेरा, दोनों का ही स्वार्थ निहित है ।२४। सूतजी ने कहा—अपने पति की बात सुनकर चंचुला ने 'बहुत अच्छा' कहा और फिर अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक दोनोंही दुष्ट हृदय परस्पर निर्भय चित्त होकर अत्यन्त कुकर्म में संलग्न हो गये ।२५-२६। इस प्रकार दुराचार में लगे रहने वाले उन दोनों स्त्री-पुरुषों को बहुत-सा समय व्यतीत हो गया और वे मूढ़ मन वाले नितान्त निष्फल रहे ।२७।

अथ विप्रः स कुमतिर्बिन्दुगो वृषलीपतिः ।
कालेन निधनं प्राप्तो जगाम नरकं खलः ।२८।
भुक्त्वा नरकदुःखानि बहूवहानि स मूढधीः ।
विन्ध्येऽभवत्पिशाचो हि गिरौ पापी भयङ्करः ।२९।
मृते भर्तरि तस्मिन्वै दुराचाररेऽथ बिन्दुगे ।
उवास स्वगृहे पुत्रैश्चिरकालं बिमूढधीः ।३०।
एवं विहरती जारैः स नारी चंचुलाह्वया ।
आसीत्कामरता प्रीता किञ्चिदुत्क्रान्तयौवना ।३१।
एकदा दैवयोगेन सम्प्राप्ते पुण्यपर्वणि ।
सा नारी बन्धुभिः सार्द्धं गोकर्ण क्षेत्रमाययौ ।३२।
प्रसङ्गात्सा तदा त्वा कस्मिंश्चितीर्थपाथसि ।
सन्तां सामान्यतो यत्र तत्र बभ्राम बन्धुभिः ।३३।

समय पाकर वह मूढ़ वृषलीपति मृत्यु को प्राप्त हो गया और उसे घोर नरक की प्राप्ति हुई ।२८। बहुत काल तक नरकदुःख भोग कर

वह मूढ़ बड़ा भयंकर एवं महापापी पिशाच होकर विंध्य पर्वत में रहने लगा ।२९। जब उस दुराचारी को मृत्यु हो गयी तब वह चंचुला पुत्रों के साथ बहुत समय तक अपने गृह में निवास करती रही ।३०। वह जारों के साथ निरन्तर सम्पर्क बनाये रही । परन्तु काम से सुख मानने वाली उस स्त्री का यौवन कुछ-कुछ व्यतीत हो गया ।३१। दैवयोग से एक समय पुण्य पर्व के आने पर वह मारी अपने बान्धवों के साथ गोकर्ण क्षेत्र में जा पहुँची ।३२। प्रसंगवश उसने किसी एक तीर्थ के जल में स्नान किया और बन्धुजनों के साथ इस क्षेत्र में भ्रमण करने लगी ।३३।

देवालयेऽथ कस्मिंश्चिद्दैवज्ञमुखतः शुभाम् ।
शुश्राव सत्कथां शम्भोः पुण्यां पौराणिकीं च सा ।३४।
योषितां जारसक्तानां नरके यमकिंकराः ।
संतप्तलोहपरिघं शिपन्ति स्मरमन्दिरे ।३५।
इति पौराणिकेनोक्तां श्रुत्वा वैराग्यवर्द्धिनीम् ।
इति पौराणिकेनोक्तां श्रुत्वा वैराग्यवर्द्धिनीम् ।
कथामासीद्भयोद्विग्ना चकम्पे तत्र सा च वै ।३६।
कथासमाप्तौ सा नारी निर्गतेषु जनेषु च ।
भीता रहसि तं प्राह भैवं संवाचकं द्विजम् ।३७।
ब्रह्मंस्त्वं श्रृण्वसद्वृत्तमजानन्त्या स्वधर्मकम् ।
भ्रुत्वा मामुद्धर स्वामिकृन्कृपां कृत्वातुलामपि ।३८।
चरितं सूल्बणं पापं मया मूढधिया प्रभो ।
नीतं पौश्चल्यतः सर्वं यौवनं मदनान्धया ।३९।
श्रुत्वेदं वचनं तेऽद्य वैराग्यरसजृम्भितम् ।
जाता महाभया साऽहं सकम्पात्तयियोगिका ।४०।

वहां किसी देवालय में किसी पण्डित के मुख से उसने शिव पुराण की कथा श्रवण की ।३४। कि जो नारी जार के साथ रमण करती है उसे यजदूत नरक में ले जाते और उसके यौन स्थानमें लोहे का बनातप्त मुसल प्रविष्ट करते हैं ।३५। इस प्रकार वैराग्य की वृद्धि करने वाली पुराणकथा को सुनकर चंचुला अत्यन्त भय से उद्विग्न होकर कांपने लगी ।३६। जब कथा पूरी हो गई और सभी श्रोता वहाँ से चले गये तब

वह भयभीत उस कथावाचक से एकान्त में प्रश्न करने लगी ।३७। चंचुला ने पूछा—हे ब्रह्मन् ! आप मुझे असत् वृत्त काली स्त्री समझकर मेरा वृत्तान्त सुनें और अत्यन्त कृपापूर्वक मेरा उद्धार करें ।३८। मेरा चरित्र अत्यन्त घृणित है । मुझ मूर्खा ने अपना यौवन अज्ञान के कारण व्यभिचार में व्यतीत कर डाला । मैं उस समय मदान्ध हो चुकी थी ।३९। आपके वैराग्य रस से परिपूर्ण वचन सुनकर मैं अत्यन्त भयभीत हो उठी हूं और मेरा हृदय कम्पायमान हो रहा है ।४०।

धिङ् मां मूढधियं पापां काममोहितचेतसम् ।
निन्द्यां दुर्विषयासक्तां विमुखीं हि स्वधर्मतः ।४१।
यदल्पस्य सुखस्यार्थे स्वकायस्य विनाशिनः ।
महापापं कृतं घोरमजानन्त्याऽतिकष्टदम् ।४२।
यास्यमिदुर्गतिं कां कां घोरां हा कष्टदायिनीम् ।
को ज्ञो यास्यति मां तत्र कुमारगरतमानसाम् ।४३।
मरणे यमदूतांस्तान्कथं द्रक्ष्ये भयंकरान् ।
कथं पाशैर्बलात्कण्ठे बध्यमाना धृतिं लभे ।४४।
कथं सहिष्ये नरके खंडशो देहकृन्तनम् ।
यातनां तत्र महतीं दुःखदां च विशेषतः ।४५।
दिवा चेष्टामिन्द्रियाणां कथं प्राप्स्यामि शोचती ।
रात्रौ कथं लभिष्येऽहं निद्रां दुःखपरिप्लुता ।४६।
हा हतास्मि च दग्धास्मि विदीर्णहृदयास्मि च ।
सर्पथाऽहं विनष्टाऽस्मि पापिनी सर्वथाप्यहम् ।४७।

मैं काम से भ्रमित चित्त हुई मूढ़ बुद्धि वाली स्त्री हूं । मुझे धिक्कार है जो मैंने अपने धर्म से विमुख होकर निंदित कुधर्म को प्राप्त किया है । ।४१। जो मैं स्वल्प सुख के आकर्षण में अपने कार्य को नष्ट कर देने वाले अत्यन्त कष्टकारी घोर दुष्कर्म में प्रवर्त्त हो गयी ।४२। अब मैं किस घोर कष्ट देने वाली दुर्गति को पाऊँगी और मुझ कुमार्ग में मन रमाने वाली स्त्री की रक्षा वहाँ कौन करेगा ? ।४३। मृत्यु को प्राप्त करने पर मैं उन यमदूतों को किस प्रकार देखूँगी । जब वे यमदूत मुझे

कठोर पाशों में बाँधेंगे तब मुझे विश्राम कैसे प्राप्त होगा ? ।४४। जब नरक में देह के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे, तब मैं उसे किस प्रकार सहन करूंगी ? वहाँ तो अत्यन्त दुःसह्य यातना प्राप्त होती हैं ।४५। उन इन्द्रियों की चेष्टा का ध्यान करती हुई मैं किस प्रकार देख सकूंगी। दुःख से युक्त हुई मैं रात्रि में किस प्रकार सो सकूंगी ।४६। मैं विदीर्ण हृदय वाली सब प्रकार दग्ध और नष्ट हो चुकी हूं, क्योंकि मैं अत्यन्त पाप कर्म वाली हूँ ।४७।

हा विधे मां महापापे तत्त्वा दुःशेमुषीं हठात् ।
अपैति यत्स्वधर्माद्व सर्वसौख्यकरादहो ।४८।
शूलप्रोतस्य शैलाग्रात्पततस्तुङ्गसो द्विज ।
यद्दुःखं देहिनो घोरं तस्मात्कोटिगुणं मम ।४९।
अश्मेधशतं कृत्वा गंगा स्नात्वा शतं समाः ।
न शुद्धिर्जायते प्रायो मत्पापस्य गरीयसः ।५०।
किं करोमि क्व गच्छामि कं वा शरणमाश्रये ।
कस्त्रायेत मां लोकेऽस्मिन्पतन्तीं नरकार्णवे ।५१।
त्वमेव मे गुर्ब्रह्मं स्त्वं माता त्वं पिताऽसि च ।
उद्धरोद्धर मां दीनां त्वमेव शरणं गताम् ।५२।
इति संजातनिर्वेदां पतिमाञ्चरणद्वये ।
उत्थाप्य कृपया धीमान्वभाषे ब्राह्मणः स हि ।५३।

हा विधना ! तुमने हठपूर्वक यह घोर पापमयी बुद्धि प्रदान कर क्या किया, जो सब सुखों को प्रदान करने वाले धर्म से हीन बना देती है ।४८। हे महात्मन् ! शूल से गोदने पर और पर्वत से गिरने पर जो पीड़ा होती है, मुझे उससे करोड़ गुनी हो रही है ।४९। सौ अश्वमेध यज्ञ कर लेने पर तथा सौ वर्ष तक निरन्तर गंगा स्नान करने पर भी मेरे घोर पाप का शोधन नहीं हो सकता ।५०। मैं क्या करूं ? कहाँ जाऊं ? किसकी शरण में पहुँचूं ? मुझ नरक सागर में गिरी हुई स्त्री की रक्षा करने में इस लोक में समर्थ कौन है ? ।५१। हे ब्रह्मन् ! आप ही मेरे गुरु और माता-पिता हैं। कृपा कर आप मुझ दीन का उद्धार

कीजिये। मैं आपकी शरण को प्राप्त हुई हूँ।५२। सूतजी ने कहा—जब चंचुला इस प्रकार निर्वेद को प्राप्त होकर ब्राह्मण के चरणों में गिर पड़ी तब कृपापूर्वक उसे उठाकर ब्राह्मण ने कहा।५३।

॥ चंचुला की सद्गति ॥

दिष्ट्या काले प्रबुद्धासि शिवानुग्रहतो वराम् ।
इमां शिवपुराणस्य श्रुत्वा वैराग्यवत्कथाम् ।१।
मा भैषीद्विजपत्नि त्वं शिवस्य शरणं व्रज ।
शिवानुग्रहतः सर्वं पापं सद्यो विनश्यति ।२।
सत्कथाश्रवणादेव जाता ते मतिरीदृशी ।
पश्चात्तापान्विता शुद्धा वैराग्यं विषयेषु ।३।
पश्चात्तापः पापकृतां निष्कृतिः परा ।
सर्वेषां वर्णितं सद्भिः सर्वपापविशोधनम् ।४।
पश्चात्तापेनैव शुद्धिः प्रायश्चित्तं करोति सः ।
यथोपदिष्टं सद्भिर्हि सर्वपापविशोधनम् ।५।
प्रायश्चित्तमधीकृत्य विधिवन्निर्भयः पुमान् ।
स याति सुगतिं प्रायः पश्चात्तापी न संशयः ।६।
एतिच्छ्वपुराणस्य कथाश्रवणतो यथा ।
जायते चित्त शुद्धिर्हि न तथान्यैरुपायतः ।७।

ब्राह्मण ने कहा—तू भाग्यवश ही ज्ञान को प्राप्त हुई है। शिवजी का तेरे ऊपर बड़ा अनुग्रह है जो तू शिवपुराण की वैराग्यमयी कथा सुनकर ही ज्ञान को प्राप्त कर सकी।१। हे विप्रपत्नी ! भय मत करो और शिवजी की शरण में जा। शिवजी के अनुग्रह से सब पाप शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।२। उनकी सत्कथा सुनने से ही तेरी मति ऐसी हुई है, जिससे तू पश्चात्ताप करके शुद्ध हुई और विषयों से विरक्त हो गई है।३। पश्चात्ताप ही पापों की परम निष्कृति है। विद्वज्जनों ने पश्चात्ताप से सब प्रकार के पापों की शुद्धि होना कथन किया है।४। पश्चात्ताप करने से जिसके पापों का शोधन न हो, उसे प्रायश्चित करना चाहिये। विद्वानों ने इससे सब पापों का शोधन होना कहा है।५। विधिपूर्वक अनेक प्रकार

के प्रायश्चित करने पर भी मनुष्य भयभीत नहीं होपाता। परन्तु पश्चाताप करने वाले को सुगति की प्राप्ति होती है।६। इसके सुनने से जैसी चित्त शुद्धि है, वैसी अन्य उपायों से नहीं होती ।७।

अतः सर्वस्व वर्गस्यैतत्कथासाधनं मतम् ।
एतदर्थं महादेवो निर्ममे त्वाग्रहादिमाम् ।८।
कथया सिद्धयति ध्यानमनया गिरिजापतेः ।
ध्यानाज्ज्ञानं परं तस्मात्कैवल्यं भवति ध्रुवम् ।९।
असिद्धशंकरध्यानः कथामेव शृणोति यः ।
स प्राप्यान्यभवे ध्यानं शंभोर्यातिः परां गतिम् ।१०।
एतत्कथाश्रवणतः कृत्वा ध्यानमुमापतेः ।
ते पश्चात्तापिनः पापा बहवः सिद्धिमागताः ।११।
सर्वेषां बीजं सत्कथाश्रवणं नृणाम् ।
यथावर्त्मसमाराध्यं भवबन्धगदापहम् ।१२।
कथाश्रवणतः शम्भोर्मननाच्च ततो हृदा ।
निदिध्यासनतश्चैव चित्तशुद्धिर्भवत्यलम् ।१३।
ध्यायतः शिवपदाब्जं चतसा निर्मलेन वै ।
एकेन जन्मना मुक्तिः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।१४।

इसलिए सभी को शिवपुराण की कथा सुननी चाहिये। इसी उद्देश्य से शिवजी ने इसे बनाया है। क्योंकि यह सभी वर्ग का साधक है ।८। इस कथा के द्वारा शिवजी का ध्यान सिद्ध हो जाता है। ध्यान से ज्ञान को सिद्धि होती और ज्ञान से कैवल्य प्राप्त होता है ।९। जिसे शंकर का ध्यान सिद्ध नहीं है, वह यदि इस कथा को सुने तो उसे शिवजी के ध्यान की सिद्धि होती है और वह परमगति को प्राप्त होता है ।१०। इस कथा को सुनकर भगवान् शिवजी का ध्यान करके पश्चात्ताप करने वाले पुरुष सिद्धि को प्राप्त हो चुके हैं ।११। इस सत्कथा को सुनने वाले पुरुष सभी प्रकार के मङ्गल को प्राप्त होते और शिवजी की आराधना करने से उनकी संसार व्याधि छूट जाती है।।१२। शिव की कथा सुनकर मनन करने से तथा निदिध्यासन के द्वारा चित्त की पूर्ण शुद्धि

हो जाती है ।१३। स्वच्छ चित्त से शिवजी के चरणकमल का ध्यान कर एक जन्म में ही तू मुक्ति को प्राप्त हो जायगी यह मैं सत्य कहता हूं ।१४

अथ बिंदुगपत्नी सा चंचुलाह्वा प्रसन्नधीः ।
इत्युक्ता तेन विप्रेण समासीद्वाष्पलोचना ।१५।
पपातारं द्विजेन्द्रस्य पादयोस्तस्य हृष्टधीः ।
चञ्चुला साञ्जलिः सा च कृतार्थास्मीत्यभाषत ।१६।
अथ सोत्थाय सातका साञ्जलिर्गद्गदाक्षरम् ।
तमुवाच महाशैवं द्विजं वैराग्ययुक्सुधौः ।१७।
ब्रह्मञ्छैववर स्वामिन्धन्यस्त्वं परमार्थदृक् ।
परोपकार निरतो वणनीयः सुसाधुषु ।१८।
उद्धरोद्धर मां साधो पतन्ती नरकार्णवे ।
श्रुत्वा यां सुकथां शवीं पुराणार्थविजृम्भिताम् ।१९।
विरक्तधीरहं जाता विषयेभ्यश्च सवतः ।
सुश्रद्धा महती ह्येतत्पुराणश्रवणेऽधुना ।२०।

तब चंचुला उसके वचनों से प्रसन्न हुई और उसके नेत्रों में आनन्दाश्रु आ गये ।१५। वह प्रसन्नतापूर्वक ब्राह्मण के चरणों में गिर गई और हाथ जोड़कर बोली, हे ब्रह्मन् ! मैं कृतार्थ होगई हूं ।१६। और अत्यन्त शान्तिपूर्वक उठकर प्रसन्न होती हुई गद्गद वाणी द्वारा वैराग्यमय वचन उस महाशैव्य से बोली ।१७। चंचुला ने कहा—हे ब्रह्मन् ! आप शिव-भक्तों में श्रेष्ठ हैं । परमार्थ के देखने वाले, परोपकार में निरत तथा साधुओं में उत्तम हैं ।१८। हे भगवन् ! मैं नरक सागर में गिरती जा रही हूं आप मेरा उद्धार करिये । जिस पुराण के अर्थ वाली शिव-कथा को सुनकर मैं पाप कर्मों से विरक्त हुई हूं, उस कल्याणकारी पुराण को श्रवण करने की मुझे अत्यन्त श्रद्धा उत्पन्न हुई है ॥१९-२०॥

इत्युक्त्वा साञ्जलिः सा वै संप्राप्य तदनुग्रहम् ।
तत्पुराणं श्रोतुकामाऽतिष्ठत्तत्सेवने रता ।२१।
अथ शैववरो विप्रस्तस्मिन्नेव स्थले सुधौः ।

सत्कथां श्रावयामास तत्पुराणस्य तां स्त्रियम् ।२२।
इत्थं तस्मिन्महाक्षेत्रे तस्मादेव द्विजोत्तमात् ।
कथां शिवपुराणस्य सा शुश्राव महोत्तमाम् ।२३।
भक्तिज्ञानविरागाणां वर्द्धिनीं मुक्तिदायिनीम् ।
बभूव सुकृतार्था सा श्रुत्वा तां सत्कथां पराम् ।२४।

सूतजी ने कहा—चंचुला हाथ जोड़कर इस प्रकार कहती हुई ब्राह्मण की कृपा को प्राप्त हुई और शिवपुराण सुनने की कामना से उसके समीप जा बैठी ।२१। वह शैव्यों में श्रेष्ठ विप्र उस पवित्र स्थान में उस स्त्री को शिवपुराण की पवित्र कथा सुनने लगे ।२२। उस विप्र श्रेष्ठ के मुख से चंचुला ने उस महान् क्षेत्र में बैठकर परमोत्तम शिवपुराण की कथा सुनी ।२३। वह कथा भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की वृद्धि करने वाली और मोक्षदायिनी थी । चंचुला उस कथा को सुनकर कृतार्थ होगई ।२४।

।। बिन्दुग सद्गति ।।

सा कदाचिदुमां देवीमुपगम्य प्रणम्य च ।
सुतुष्टाव करौ बद्ध्वा परामानन्दसंप्लुता ।१।
गिरिजे स्कन्दमातस्त्वं सेविता सर्वदा नरैः ।
सर्वसौख्यप्रदे शम्भुप्रिये ब्रह्मस्वरूपिणि ।२।
विष्णु ब्रह्मादिभिः सेव्या सगुणा निर्गुणापि च ।
त्वामाद्या प्रकृतिःसूक्ष्मा सच्चिदानन्दरूपिणी ।३।
सृष्टिस्थितिलयकरी त्रिगुण त्रिसुरायला ।
ब्रह्मविष्णुमहेशानां सुप्रतिष्ठाकरा परा ।४।
इति स्तुत्वा महेशीं तां चंचुला प्राप्तसद्गतिः ।
विरराम नतस्कन्धा प्रेमपूर्णाश्रुलोचना ।५।
ततः सा करुणाविष्ठा पार्वती शंकरप्रिया ।
तामुवाच महाप्रीत्या चंचुला भक्तवत्सला ।६।
चंचुले सखि सुप्रीतानया स्तुत्यास्मि सुन्दरि ।
किं याचसे वरं ब्रूहि नादेयं विद्यते तव ।७।

सूतजी ने कहा—एक समय चंचुला भगवती उमा के पास पहुँची और उन्हें प्रणाम कर परमानन्द पूर्वक कर जोड़कर प्रसन्न करने लगी ।१। चंचुला ने कहा—हे गिरजे ! हे स्कन्द माता ! आपकी मनुष्य सदा सेवा करते हैं । आप ही सदा सुख के देने वाली तथा साक्षात् ब्रह्म स्वरूप हो ।२। ब्रह्मा, विष्णु आदि के द्वारा सेवनीय आप सगुण निर्गुण स्वरूप आद्या प्रकृति एवं सूक्ष्म सच्चिदानन्द स्वरूप वाली हो ।३। आप ही सृष्टि स्थिति और लय करने वाली त्रिगुणात्रिसुरालया एवं ब्रह्मा, विष्णु, महेश की सुप्रतिष्ठा करने वाली हो ।४। सूतजी ने कहा—सद्गति प्राप्त चंचुला ने भगवती उमा की इस प्रकार स्तुति की और नेत्रों में अश्रु लाती हुई शान्ति को प्राप्त हुई ।५। तब करुणामयी गिरिजा ने उस भक्त-वत्सला चंचुला से कहा—हे चंचुले ! मैं तेरी स्तुति से अत्यन्त प्रसन्न हुई हूं । तुझे जो कुछ वर माँगना हो माँग ले, तेरे लिये कोई भी वस्तु अदेय नहीं है ॥६–७॥

इत्युक्ता या गिरिजया चंचुला सुप्रणम्यताम् ।
पर्यपृच्छत सुप्रीत्या साञ्जलिर्नतमस्तका ।८।
मम भर्ताभुना क्वास्ते नैव जानामि तद्गतिम् ।
तेन युक्ता यथाहं वै भवामि गिरिजेऽनघे ।९।
तथैव कुरु कल्याणि कृपया दीनवत्सले ।
महादेवि महेशानि भर्ता मे वृषलीपति ।
तत्तः पूर्व मृतः पापी न जाने कां गतिं गतः ।१०।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्याश्चंचुलाया हि पार्वती ।
प्रत्युवाच सुसंवीत्या गिरिजा नयवत्सला ।११।
सुते भर्ता बिन्दुगाह्वो महापापी दुराशयः ।
वेश्याभोगी महामूढो मृत्वा स नरकं गतः ।१२।
भुक्त्वा नरकदुःखानि विविधान्यमिताः समाः ।
पापशेषेण पापात्मा विन्ध्ये जातः पिशाचकः ।१३।
इदानीं स पिशाचोऽस्ति नानाक्लेशसमन्वितः ।
तवैव वातभुग्दुष्टः सर्वकष्टवहः सदा ।१४।

सूतजी ने कहा—पार्वतीजी की बात सुनकर चंचुला ने हाथ जोड़े और प्रणामपूर्वक शिर झुका कर उनसे प्रश्न किया ।८। हे भगवती ! मेरा स्वामी इस समय कहाँ है ? मैं उसके विषय में नहीं जानती । हे कल्याणी ! वह मुझे मिल सके, ऐसी कृपा करिये ।९। हे महादेवी ! मेरा स्वामी वृषलीपति था । वह पापी मुझसे पहले ही मर गया, न जाने उसे कौन-सी गति प्राप्त हुई ।१०। सूतजी ने कहा—चंचुला की यह बात सुनकर भगवती पार्वतीजी प्रसन्न होकर कहने लगीं ।११। हे पुत्री ! तेरा पति बिन्दुग घोर पापी और वेश्यागामी था । वह महामूढ़ मरने के पश्चात् नरक में गिरा ।१२। उसने बहुत वर्षों तक नरक के दुःख भोगे और बचे हुये पाप के कारण वह विंध्याचल में जाकर पिशाच हुआ ।१३। इस समय वह अनेक क्लेशों में पड़ा हुआ पिशाच है और वायु भक्षण करता हुआ अनेक कष्टों को भोगता है ।१४।

इति गौर्य्या वचः श्रुत्वा चंचुला सा शुभव्रता ।
पतिदुःखेन महता दुःखिताऽऽसीत्तदा किल ।१५।
समाधाय ततश्चित्त सुप्रणम्य महेश्वरीम् ।
पुनः पप्रच्छ सा नारी हृदयेन विदूयता ।१६।
महेश्वरी महादेवि कृपां कुरु ममोपरि ।
समुद्धर पतिं मेऽद्य दुष्टकर्मकं खलम् ।१७।
केनोपायेन मे भर्ता पापात्मा स कुबुद्धिमान् ।
सद्गतिं प्राप्नुयाद्देवि तद्वदाशु नमोऽस्तु ते ।१८।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्याः पार्वती भक्तवत्सला ।
प्रत्युवाच प्रसन्नात्मा चंचुलां स्वसखीं च ताम् ।१९।
शृणुयाद्यदि ते भर्ता पुण्यां सिवकथा पराम् ।
निस्तीर्य दुर्गतिं सर्वां सद्गतिं प्राप्नुयादिति ।२०।
इति गौर्य्या वचः श्रुत्वाऽमृताक्षरमथादरात् ।
कृताञ्जलिर्नतस्कन्धा प्रणनाम पुनः पुनः ।२१।
तत्कथाश्रवणं भर्तुः सर्वपापविशुद्धये ।
सद्गतिप्राप्तये चैव प्रार्थयामास तां तदा ।२२।

सूतजी ने कहा—पार्वतीजी की बात सुनकर उत्तम व्रत वाली चंचुला अपने पति के दुःख से अत्यन्त दुःखी हो गई ।१५। अपने स्वामी में चित्त लगाकर पार्वतीजी को प्रणाम कर वह दुखित हृदय से उनसे पुनः प्रश्न करने लगी ।१६। हे महादेवी ! मुझ पर कृपा करिये । दुष्टकर्म के फल से कष्ट भोगते हुए मेरे स्वामी का उद्धार कीजिये ।१७। मेरा पापात्मा स्वामी किस प्रकार बुद्धिमान हो सद्गति को प्राप्त हो, मेरे प्रति वह कहिये। मैं आपको प्रणाम करती हूं ।१८। सूतजी ने कहा—उसकी बात सुनकर भक्त-वत्सल पार्वतीजी ने प्रसन्न होकर अपनी सखी चंचुला से कहा ।१९। यदि तेरा पति पवित्र शिव कथा सुने तो दुर्गति से पार होकर श्रेष्ठ गति प्राप्त करेगा ।२०। पार्वतीजी के असृत समान शब्दों को श्रवण कर आदर पूर्वक हाथ जोड़ती हुई चंचुला अपने स्वामी के पाप की निवृत्ति के लिये शिव कथा की इच्छा करती हुई, कथा का सुयोग प्राप्त करने के निमित्त भगवती से पुनः प्रार्थना करने लगी ।२१-२२।

तयामुहुर्मुहुर्नार्या प्रार्थ्यमाना शिवप्रिया ।
गौरी कृपान्वितासीत्सा महेशी भक्तवत्सला ।२३।
अथ तुम्बुरमाहूय शिवसत्कीर्तिगायकम् ।
प्रीत्या गन्धवराजं हि गिरिकन्येदमब्रवीत् ।२४।
हे तुं बुरो शिवप्रीत मन मानसकारक ।
सहानया विन्ध्यशलं भद्रं ते गच्छ सत्वरम् ।२५।
आस्ते तत्र महाघोरः पिशाचोऽतिभयंकरः ।
तद्भूत शृणु सुप्रीत्याऽऽदितः सर्वं ब्रवीमि ते ।२६।
पुराभवे पिशाचः स बिन्दुगाह्वोऽभवद्द्विजः ।
अस्या नार्याः पतिर्दुष्टो मत्सख्या वृषलोपतिः ।२७।
स्नानसंध्याक्रियाहीनोऽशोचः क्रीधविमूढधीः ।
दुर्भक्षो सज्जनद्वेषी दुष्परिग्रहकारकः ।२८।
हिंसकः शस्त्रधारी च सव्यहस्तेन भोजनी ।
दीनानां पीडकः क्रूरः परवेश्मप्रदीपकः ।२९।
चाण्डालाभिरतो नित्य वेश्याभोगी महाखलः ;

स्वपत्नीत्यागकृत्पापी दुष्टसंगरतस्तदा ।३०।

सूतजी ने कहा—जब उसने पार्वतीजी की बारम्बार प्रार्थना की तब भक्तवत्सला पार्वतीजी कृपा से युक्त हो गईं ।२३। उन्होंने शिव की सत्कीर्ति का गान करने वाले तुम्बरु गन्धर्व को बुलाया और उससे प्रीति-पूर्वक कहने लगीं ।२४। पार्वतीजी ने कहा—हे तुम्बरु ! तुम शिवजी की प्रीति करने वाले और मेरे वचन मानने वाले हो । इसके साथ विंध्याचल पर्वत को जाओ ।२५। वहाँ एक अत्यन्त भयङ्कर पिशाच निवास करता है । मैं तुमसे उसकी बात कहती हूँ, तुम प्रसन्न होकर उसे श्रवण करो ।२६। पिशाच योनि को प्राप्त होने से पूर्व बिन्दुग नामक ब्राह्मण था । वह दुष्ट इसी स्त्री का स्वामी था । वेश्यागामी, स्नान एवं संध्या की क्रिया से रहित, पवित्रता से हीन, क्रोध से मूर्ख बुद्धि वाला, दुर्भक्षी, सज्जनों से द्वेष रखने वाला और दुष्परिग्रह वाला था ।२७।-२८। वह शस्त्रधारी, हिंसक, बाँये हाथ से भोजन करने वाला, दोनों को पीड़ित करने वाला, क्रूर, पीड़क तथा लोगों के घर में आग लगाने वाला था ।२९। चाण्डाल से प्रीति करने वाला, वेश्यागामी, अत्यन्त पापी, पत्नी का त्याग करने वाला और दुष्ट सङ्ग से प्रीति करने वाला था ।३०।

तेन वेश्याकुसंगेन सुकृतं नाशितं महत् ।
वित्तलोभेन महषी निभया जारिणी कृता ।३१।
आमृत्योः स दुराचारी कालेन निधनं गतः ।
ययौ यमपुरं घोरंभोगस्थानं हि पापिनाम् ।३२।
तत्र भुक्त्वा स दुष्टात्मा नरकानि बहूनि च ।
इदानीं स पिशाचोऽस्ति विंध्येऽद्रौ पाप भुक्खलः ।३३
तस्याग्रे परमां पुण्यां सर्वपापविनाशिनीम् ।
दिव्यां शिवपुराणस्य कथांकथय यत्नतः ।३४।
दुतं शिवपुराणस्य कथा श्रवणतः परात् ।
सर्वपाप विशुद्धात्मा हास्यति प्रेततां च सः ।३५।
मुक्तं च दुर्गतेस्तंवै बिन्दुगं त्वं पिशाचकम् ।

मदाज्ञया विमानेन समानय शिवान्तिकम् ।३६।

उसने वेश्या-सङ्ग से अपने सभी सुकृतों को नष्ट कर डाला और धन के लोभ से अपनी पत्नी को भी व्यभिचारिणी बना दिया ।३१। मरने के समय तक वह दुराचार में लगा रहा और मृत्यु होने पर यम-लोक को गया जहाँ से उसे पापियों के घोर स्थान की प्राप्ति हुई ।३२। वहाँ उस दुष्टात्मा को अनेक नरक भोगने पड़े और अब विंध्याचल पर्वत में जाकर पिशाच हो गया है ।३३। तुम वहाँ जाकर परम पवित्र शिवपुराण की कथा, जो सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने में समर्थ है, उस पिशाच को श्रवण कराओ ।३४। वह उस पवित्र कथा सुनते ही पाप-रहित होकर अपने प्रेतत्व का त्याग कर देगा ।३५। तब वह दुर्गति से छूट कर अपने पिशाचत्व को छोड़ देगा । उस समय तुम उसे विमान पर बैठा कर मेरी आज्ञा से शिवजी के ले जाना ।३६।

इत्यादिष्टो महेशान्या गन्धर्वेन्द्रश्च तुंबुरुः ।३७।
मुमुदेऽतीव मनसि भाग्यं निजमवर्णयत् ।३८।
आरुह्य सुविमानं स सत्या तत्प्रियया सह ।
ययौ विंध्याचलं सोऽरं यत्रास्ते नारदप्रियः ।३९।
तत्रापश्यत्पिशाचं तं महाकायं महाहनुम् ।
प्रहसन्तं रुद्रन्तं च वल्गतं विकटाकृतिम् ।
बलाज्जग्राह तं पाशः पिशाचं चातिभीकरम् ।
तुम्बुरुश्शिवसत्कीर्तिगायकश्च महाबली ।४०।
अथोशिवपुराणस्य वाचनार्थं स तुम्बुरुः ।
निश्चित्य रचनां चक्रे महोत्सवसमन्विताम् ।४१।
पिशाचं तारितुं देव्याः शासनात्तुम्बुरुगतः ।
विंध्यं शिवपुराणं स ह्यद्रि श्रावयितुं परम् ।४२।
इति कोलाहलो जातः सवलोकेषु वै महान् ।
तत्र तच्छ्रवणार्थाय ययुर्देवर्षयो द्रुतम् ।४३।

सूतजी ने कहा—तुम्बरु गन्धर्व से जब पार्वतीजी ने इस प्रकार कहा, तब वह अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने भाग्य को सराहने लगा ।३७।

चंचुला को साथ लेकर वह गन्धर्व विमान में बैठा और तब उनने विंध्याचल पर्वत को प्रस्थान किया ।३८। वहाँ वह विकराल हनु वाला महाकाय पिशाच उन्हें दिखाई दिया । वह विकट आकार वाला कभी हँसता, रोता कभी कूदता और चाहे जो कुछ बकता था ।३९। तुम्बरु ने उस पिशाच को बलपूर्वक पाशों के द्वारा पकड़ा और फिर उसके समक्ष शिवजी की कीर्ति का गान प्रारम्भ किया ।४०। फिर तुम्बरु ने शिवपुराण पढ़ने के लिये एक महोत्सव के वातावरण का आयोजन किया ।४१। पार्वतीजी की आज्ञा से उस पिशाच को सङ्कट मुक्त करने लिये तुम्बरु गया, वह शिवपुराण की कथा विंध्याचल में कहेगा ।४२। सब लोगों में यह विज्ञप्ति प्रसारित हो गई तब शिवपुराण का श्रवण करने के लिये वहाँ देवता और ऋषि भी आ गये ।४३।

समाजस्तत्र परमोऽद्भुतश्चासीच्छुभावहः ।
तेषां शिवपुराणस्यागतानां श्रोतुमादरात् ।४४।
पिशाचमथ तं पाशैर्बद्ध्वा समुपवेश्य च ।
तुंबुरुर्वल्लकीहस्तो जगौ गौरीपतेः कथाम् ।४५।
आरभ्य संहितामाद्यां सप्तमीसंहितावधि ।
स्पष्टं शिवपुराणं हि समाहात्म्यं समावदत् ।४६।
श्रुत्वा शिवपुराणं तु सप्तसंहितमादरात् ।
बभूवुः सुकृतार्थास्ते सर्वे श्रोतार एव हि ।४७।
स पिशाचो महापुण्यं श्रुत्वा शिवपुराणकम् ।
विधूय कलुषं सद्यो जहौ पैशाचिकं वपुः ।४८।
दिव्यरूपो बभूवाशु गौर वर्णः सितांशुकः ।
सर्वालंकारदीप्तांगस्त्रिनेत्रश्चन्द्रशेखरः ।४९।

उस समय वहाँ श्रेष्ठ और अद्भुत समाज हुआ सभी, आदरपूर्वक शिवपुराण सुनने को एकत्र हुए थे ।४४। पाशों से बँधा वह पिशाच भी वहाँ बैठा । उस समय तुम्बरु ने वीणा लेकर पार्वतीपति शिवजी का कीर्ति-गान प्रारम्भ किया ।४५। उसने प्रथम संहिता से प्रारम्भ कर सातवीं संहिता तक माहात्म्य सहित सम्पूर्ण शिवपुराण की

कथा का वर्णन किया ।४६-४७। कथा श्रवण के फल से पिशाच ने भी पाप रहित होकर अपने शरीर का त्याग कर दिया ।४८। वह तत्काल गौर वर्ण का होकर श्वेत वस्त्रधारी दिखाई देने लगा । सम्पूर्ण अलङ्कारों से जगमगाता हुआ वह तीन नेत्र युक्त चन्द्रशेखर रूप हो गया ।४९।

शिवपुराण श्रवण विधि

श्रीमच्छिवपुराणस्य श्रवणस्य विधिं वद ।
येन सर्वं लधेच्छ्रोता सम्पूर्ण फलमुत्तमम् ।१।
अथ ते संप्रवक्ष्यामि संपूर्ण धलहेतवे ।
विधि शिवपुराणस्य शौनक श्रवणे मुने ।२।
दैवज्ञं च प्रमाहूय सन्तोष्य च जनान्वितः ।
मुहूर्तं शोधयेच्छुद्धं निर्विघ्नेन समाप्तये ।३।
वार्ता प्रेष्या प्रयत्नेन देशे देशे च सा शुभा ।
भविष्यति कथा शैवी आगन्तव्यं शुभार्थिभिः ।४।
दूरे हरिकथाः केचिद्दूरे शंकरकीर्तनाः ।
स्त्रियः शूद्रादयो ये च बोधस्तेषां भवेद्यतः ।५।
देशे देशे शांभवा ये कीर्तन श्रवणोत्सुकाः ।
तेषामानयनं कार्यं तत्प्रकारार्थमादरात् ।६।
भविष्यति समाजोऽत्र साधूनां परमोत्सवः ।
पारायणे पुराणस्य शैवस्य परमाद्भुतः ।७।

शौनकजी ने कहा—हे सूतजी ! आप शिवपुराण के सुनने की विधि मेरे प्रति कहिए, जिससे श्रोताओं को श्रेष्ठ फल की प्राप्ति हो सके ।१। सूतजी ने कहा—मैं फल के लिए शिवपुराण की विधि तुमसे कहता हूं । हे शौनक ! तुम इसे ध्यान से श्रवण करो ।२। शिवपुराण की कथा सुनने के लिए ज्योतिषी को बुलावे और कुटुम्ब सहित सन्तुष्ट कर पुराण के निर्विघ्न पूर्ण होने के लिए मुहूर्त निकाले ।३। फिर देश-देश में समाचार भेजे कि अमुक स्थान पर शिवपुराण की कथा होगी, उसे सुनने के लिए सबको सम्मिलित होना चाहिये ।४। जो शिवजी की कथा अथवा उनके कीर्तन से रहित हो ऐसे स्त्री, शूद्र आदि अज्ञानियों को भी बोध हो

सके ।५। देश-देश में जो शिव-भक्त कीर्तन और श्रवण के लिये उत्कण्ठित हों, उनको आदरपूर्वक आमन्त्रित करना चाहिए ।६। इस स्थान पर साधुओं का परम मंगल प्रदान करने वाला समाज होगा तथा अत्यंत अद्‌भुत शिवपुराण का पारायण होगा ।७।

नावकाशो यदि प्रेम्णागन्तव्यं दिनमेककम् ।
सर्वथाऽऽगमनं कार्यं दुर्लभा च क्षणस्थितिः ८।
तेषामाह्वानमेवं हि कार्यं सविनय मुदा ।
आगतानां च तेषां हि सर्वथा कार्य्य आदरः ।९।
शिवालये च तीर्थे वा वने वापि गृहेऽथवा ।
कार्यं शिवपुराणस्य श्रवणस्थलमुत्तमम् ।१०।
कार्यं संशोधन भूमेर्लेपनं धातुमण्डनम् ।
विचित्रा रचना दिव्या महोत्सवपुरासरम् ।११।
कर्तव्यो मण्डपोऽत्युच्चैः कदलीस्तं भमंडितः ।
फलपुष्पादिभि सम्यग्विष्वग्वर्तानराजितः ।१२।
चतुर्दिक्षु ध्वजारोपः सपताकः सुशोभनः ।
सुभक्तिः चर्वथा कार्या सर्वानन्दविधायिनी ।१३।
सकल्प्यमानसं दिव्यं शङ्करस्य परमात्मनः ।
वक्तुश्चापि तथा दिव्यमासनं सुखसाधनम् ।१४।

यदि अवकाश न हो तो एक दिन के लिए ही प्रेम पूर्वक आइये । यहाँ अवश्य आना चाहिये । क्योंकि ऐसे कार्य क्षणमात्र के लिये भी दुर्लभ हैं ।८। इस प्रकार विनयपूर्वक लोगों को आमन्त्रित करना चाहिए और आगत व्यक्तियों का आदर एवं सम्मान करना चाहिये ।९। यदि शिवालय रूप तीर्थ की स्थापना कराये और वहाँ शिवपुराण की कथा करावे तो वह स्थान इसके लिए सर्वश्रेष्ठ है ।१०। जहाँ शिवपुराण की कथा हो, वहाँ पहिले पृथ्वी को लीपे और धातुओं से आच्छादित करे । इस प्रकार विचित्र रचना पूर्वक महोत्सव करे ।११। केला का ऊँचा मण्डप निर्मित करे और फल पुष्पादि का अर्पण करते हुये भले प्रकार पूजन करना चाहिये ।१२। चारों ओर ध्वजा पताका फहराये और सब

प्रकार से आनन्द प्रदान करने वाली श्रेष्ठ भक्ति का आश्रय ग्रहण करे ।१३। संकल्प कर भगवान् शङ्कर को दिव्य आसन पर प्रतिष्ठापित करे और भक्त को बैठने के लिये भी श्रेष्ठ आसन दे ।१४।

श्रोतृणां कल्पनीयानि सुस्थलानि यथार्हतः ।
अन्येषां च स्थलान्येव साधारणतया मुने ।१५।
विवाहे यादृश चित्त तादृशं कार्यमेव हि ।
अन्य चिन्ता विनिर्वार्य्या सर्वा शौनक लौकिकी ।१६।
उदङ्मुखो भवेद्वक्ता श्रोता प्राग्वदनस्थता ।
व्युत्क्रमः पादयोर्ज्ञेयो विरोधो नास्ति कश्चन ।१७।
अथवा पूर्वदिग्ज्ञेया पूज्यपूजकमध्यतः ।
अथवा सम्मुखं वक्तुः श्रोतृणामाननं स्मृतम् ।१८।
नीचबुद्धिं न कुर्वीत पुराणज्ञे कदाचन ।
यस्य वक्त्रोद्गता वाणी कामधेनुः शरीरिणाम् ।१९।
गुरुवत्सन्ति बहवो जन्मतो गुणतश्च वै ।
परो गुरु पुराणज्ञस्तेषां मध्ये विशेषतः ।२०।
पुराणज्ञः शुचिर्दक्षः शान्तो विजितमत्सरः ।
साधुः कारुण्यवान्वाग्मी वदेत्पुण्यकथामिमाम् ।२१।
आसूर्योदयमारभ्य सार्द्धद्विप्रहरान्तकाम् ।
कथा शिवपुराणस्य वाच्यसम्मक् सुधीमता ।२२।

श्रोताओं के बैठने के लिये भी योग्य एवं सुन्दर स्थान रखे तथा सभी स्थान साधारण रूप से निश्चित करे ।१५। शिवपुराण की कथा में जैसा ही उत्साह रखे, जैसा विवाहादि अन्य मङ्गल कार्यों के करने में होता है । हे शौनक ! सभी लौकिक चिन्ताओं को उस समय त्याग दे ।१६। वक्ता का मुख उत्तर दिशा में रहे और श्रोता पूर्वाभिमुख होकर पालथी मारकर बैठे । कथा के सम्मुख पाँव न रखे और किसी प्रकार का भी बिरोध न हो ।१७। अथवा पूज्य पूजक के बीच में पूर्व दिशा होनों चाहिये अथवा श्रोताओं के मुख कथा वाचक के सम्मुख होने चाहिये । ।१८। पुराण के जानने वाले के प्रति शंका युक्त बुद्धि न करे, क्योंकि

उसके सुख के निकलने वाले वचन देहधारियों के लिये कामधेनु के समान हैं ।१९। जन्म से और गुण से अनेक गुरु होते हैं, परन्तु उन सभी में शिवपुराण का ज्ञाता विशिष्ट प्रकार का गुरु होता है ।२०। पुराण का जानने वाला पवित्र, चतुर, शान्त, मन्द-रहित, साधु दयावान और वाग्मी हो जो इस पुराण कथा को कहता है ।२१। शिवपुराण की कथा का आरम्भ सूर्योदय से पूर्व कर दे और बुद्धिमान कथावाचक उसे साढ़े दो पहर तक बाँचे ।२२।

कथां शिवपुराणस्य शृणुयाददरात्सुधीः ।
श्रोता सुविधिना शुद्धः शुद्धचित्तः प्रसन्नधीः ।२३।
अनेककर्मविभ्रान्तः कामादिषड्विकारवान् ।
स्तेनः पाखण्डवादी च वक्ता श्रोता न पुण्यभाक् ।२४।
लोकचिन्तां धनागारपुत्रचिंतां व्युदस्य च ।
कथाचित्तः शुद्धमतिः स लभेष्फलमुत्तमम् ।२५।
श्रद्धाभक्तिसमायुक्ता नान्यकार्येषु लालसः ।
वाग्यताः शुचयोऽव्यग्राः श्रोतारः पुण्यभागिनः ।२६।
कथायां कथ्यमानायां गच्छन्त्यंयत्र ये नराः ।
भोगान्तरे प्रणश्यन्ति तेषां दारादिसम्पदः ।२७।
असम्प्रणम्य वक्तारं कथां शृण्वन्ति ये नराः ।
भुक्त्वा ते नरकान्सर्वान्भवत्यर्जुनपादपाः ।२८।
अनातुरा श्याना ये शृण्वतीमां कथां नराः ।
भुक्त्वा ते नरकान्सर्वान्भवत्यजगरादयः ।२९।

शिवपुराण की कथा बुद्धिमान श्रोता आदर पूर्वक सुने और शुद्ध तथा प्रसन्नचित्त रहे ।२३। अनेक कर्मों से भ्रान्ति को प्राप्त तथा कामादि छै विकारों से युक्त, चोर, पाखण्डी वक्ता या श्रोता पुण्य के भागी नहीं होते ।२४। उत्तम फल की प्राप्ति उसी को होती है जो लोक-चिन्ता, धन, गृह, या पुत्र की चिन्ता त्याग कर केवल शिव कथा में चित्त लगाता है ।२५। श्रद्धा भक्ति से युक्त तथा अन्य कार्यों की लालसा से मुक्त युरुष मौन रहकर और व्यग्रता को छोड़कर कथा सुनते हैं, वही पुण्य-

भागी होते हैं ।२६। कथा होते हुये जो मनुष्य उसे बीच में छोड़कर अन्य स्थान को चले जाते हैं, उनके भोगान्तर में स्त्री, धन आदि का नाश हो जाता है ।२७। जो मनुष्य कथा वाचक को प्रणाम किये बिना कथा श्रवण करते हैं, वे नरक में दुःख पाकर अर्जुन वृक्ष की योनि प्राप्त करते हैं ।२८। जो मनुष्य निरोग होते हुये भी लेटकर कथा श्रवण करते हैं, वे नरकों के दुःख भोगने के पश्चात् अजगर आदि होते हैं ।२९।

वक्तुः समासनारूढ़ा ये शृण्वन्ति कथामिमाम् ।
गुरुतल्पसमं पाप प्राप्यते नारकैः सदा ।३०।
ये निंदंति च वक्तारं कथां चेमां सुपावनीम् ।
भवंति शनका भुक्त्वा दुःखं जन्मशतं हि ते ।३१।
कथायां वर्तमानायां दुर्वादं ये वदंति हि ।
भुक्त्वा ते नरकान्घोरान्भवंति गर्दभास्ततः ।३२।
कदाचिन्नापि शृण्वन्ति कथामेतां सुपावनीम् ।
भुक्त्वा ते नरकान्घोरान्भवंति वनसूकराः ।३३।
कथायां कीत्यमानायां विघ्नं कुर्वन्ति ये खलाः ।
कोटिजन्मं नरकान्भुक्त्वा भवंति ग्रामसूकराः ।३४।
एवंविचार्य शुद्धात्मा श्रोता वक्तृमुभक्तिमान् ।
कथाश्रवणहेतोर्हि भवेत्प्रीत्योद्यतः सुधीः ।३५।
कथाविघ्नविनाशार्थं गणेशं पूजयेत्पुरा ।
नित्य संपाद्य संक्षेपात्प्रायश्चित्तं सपाचरेत् ।३६।

जो किसी अहं-भावना वश वक्ता के बराबर, ऊंचे आसन पर बैठ कर कथा श्रवण करते हैं, उनको गुरु शैय्या पर चढ़ने का पाप होता है ।३०। जो वक्ता इस पवित्र कथा की निन्दा करते हैं, वे दुःख भोगते हुये सौ जन्म तक श्वान योनि को प्राप्त होते हैं ।३१। जो कथा होते के समय मुख से दुर्वचन निकालते हैं, वे घोर नरक के दुखों को भोगकर गधे की योनि में जाते हैं ।३२। इस पवित्र कथा को जो कभी भी श्रवण नहीं करते, वे घोर नरक में जाकर दुःख भोगते और फिर वन शूकर होते हैं ।३३। कथा होते समय जो दुष्ट मनुष्य विघ्न उपस्थित करते हैं, वह

करोड़ वर्षों तक नरक भोगने के उपरान्त ग्राम शूकर बनते हैं ।३४। इसलिये श्रोता और वक्ता दोनों ही विचार पूर्वक शुद्धात्मा होकर भक्ति-भाव सहित कथा सुनने के लिये बुद्धिपूर्वक तत्पर हों ।३५। कथा में विघ्न उपस्थित न हो, इसके लिये प्रथम गणेशजी का पूजन करे, फिर संक्षेप में नित्य कर्म करके प्रायश्चित करे ।३६।

नवग्रहांश्च सम्पूज्य सर्वतोभद्रदैवतम् ।
शिवपूजोक्तविधिना पुस्तकं तत्समर्चयेत् ।३७।
पूजनांते महाभक्त्या करौ बद्ध्वा विनीतकः ।
साक्षाच्छिवस्वरूपस्य पुस्तकस्य स्तुतिं चरेत् ।३८।
श्रीमच्छिवपुराणाख्य प्रत्यक्षस्त्व महेश्वरः ।
श्रवणार्थं स्वीकृतोऽसि सन्तुष्टो भव वै मयि ।३९।
मरोरथ मदीयोऽयं कर्तव्यः सफलस्त्वया ।
निर्विघ्नेन सुसम्पूर्ण कथाश्रवणमस्तु मे ।४०।
भवाब्धिमग्नं दीनं मां समुद्धर भवार्णवात् ।
कर्मग्राहगृहीतांगं दासोऽहं तव शंकर ।४१।
एवं शिवपुराणं हि साक्षाच्छिवस्वरूपकम् ।
स्तुत्वा दीनवचः प्रोच्य वक्तुः पूजां समारभेत् ।४२।
शिवपूजोक्तविधिना वक्तारं च समर्चयेत् ।
सपुष्पवस्त्रभूषाभिर्धूपदीपादिनाऽर्चयेत् ।४३।
तदग्रे शुद्धचित्तेन कर्तव्यो नियमस्यदा ।
आसमाप्ति यथाशक्त्या धारणीयः सुयत्नतः ।४४।
व्यासरूप प्रबोधाग्र्य शिवशास्त्रविशारद ।
एतत्कथाप्रकाशेन मदज्ञानं विनाशय ।४५।

नवग्रह और सर्वतोभद्र के देवताओं को पूजकर शिवजी की पूजन विधि के अनुसार पुराण-पुस्तक का पूजन करना चाहिये ।३७। पूजन के अन्त में भक्ति पूर्वक दोनों हाथ जोड़कर साक्षात् शिवजी स्वरूप पुराण-पुस्तक की स्तुति करे ।३८। यह श्री शिवपुराण प्रत्यक्ष शिवजी का स्वरूप है । सुनने के लिये यह सत्कार करने से मेरे ऊपर प्रसन्न हों

।३९। मेरे इन मनोरथों को आप पूर्ण कीजिये । मेरी यह कथा निर्विघ्न सम्पूर्ण हो जाय, ऐसी कृपा करिये ।४०। हे शङ्कर ! मैं आपका दास हूं । कर्म रूपी ग्राह के द्वारा पकड़ा हुआ संसार सागर में पड़ा हूँ । इस सागर से आप मुझे पार लगाइये ।४१। इस प्रकार इस साक्षात् शिव स्वरूप शिवपुराण का स्तवन करता हुआ नम्रतायुक्त वाणी से व्यास पूजन करे ।४२। शिवजी का पूजन जिस विधि से किया जाता है, उसी विधि से वक्ता का पूजन करे । वस्त्राभूषण, पुष्प और धूप दीप से पूजन करे ।४३। उसके सम्मुख शुद्ध चित से नियम ले और जब तक कथा सम्पूर्ण हो तब तक अपने सामर्थ्यानुसार नियमों का पालन करे ।४४। हे व्यास स्वरूप ! हे ज्ञान के देने वाले ! हे सम्पूर्ण शास्त्र विशारद ! आप इस कथा को कहकर मेरे अज्ञान का हरण कीजिये ।४५।

शिवपुराण के श्रोताओं के विधि निषेध और पूजाविधि

पुंसां शिवपुराणस्य श्रवणव्रतिनां मुने ।
सर्वलोकहितार्थाय दयया नियमं वद ।१।
नियमं शृणु सद्भक्त्या पुसां तेषां च शौनक ।
नियमात्सत्कथां श्रुत्वा निर्विघ्नफलमुत्तमम् ।२।
पुसां दीक्षाविहीनानां नाधिकारः कथाश्रवे ।
श्रोतुकामैरतो वक्तुर्दीक्षा ग्राह्या च तैर्मुने ।३।
ब्रह्मचर्यमधः सुप्ति पत्रावल्यां च भोजनम् ।
कथासमाप्तौ भुक्ति च कुर्यान्नित्यं कथाव्रती ।४।
आसमाप्तपुराणं हि समुपोष्य सुशक्तिमान् ।
शृणुयाद्भक्तिः शुद्धः पुराणं शैवमुत्तमम् ।५।
घृतपानं पयःपानं कृत्वा वा शृणुयात्सुखम् ।
फलाहारेण वा श्राव्यमेकभुक्तं न वाहितत् ।६।
एकवारं हविष्यान्न भुंज्यादेतत्कथाव्रती ।
सुखसाध्यं यथा स्यात्तच्छ्रवणं कायमेव च ।७।

शौनकजी ने कहा—हे सूतजी ! शिवपुराण का व्रत करने वालों के सम्पूर्ण लोकहित के लिये नियम कहिये ।१। सूतजी ने कहा–हे शौनक ! भक्तिपूर्वक उनके नियमों को सुनो । नियम से सत्कथा को सुने, जिससे निर्विघ्नता पूर्वक श्रेष्ठ फल प्राप्त हो ।२। कथा सुनने में दीक्षा-रहित का अधिकार नहीं है । इसलिये वक्ता से दीक्षा लेनी चाहिए ।३। ब्रह्मचर्य पूर्वक पृथिवी में शयन, पत्तल में भोजन तथा कथा समाप्त होने पर आहार ग्रहण करे ।४। श्रोता को उचित है कि पुराण-कथा के सम्पूर्ण होने पर्यन्त सामर्थ्यानुसार व्रत पालन करते हुए श्रद्धा सहित शिवपुराण का श्रवण करे ।५। घृत या दुग्ध का पान करके या फलाहार करके अथवा एक समय भोजन करके कथा सुने ।६। इस कथा के सुनने वाले को एक बार हविष्यान्न का भोजन करना चाहिये जिस प्रकार कथा श्रवण सुखसाध्य हो सके वैसा ही करे ।७।

भोजनं सुकरं मन्ये कथासु श्रवणप्रदम् ।
नोपवासो वरश्चेत्स्यात्कथाश्रवणविघ्नकृत् ।८।
गरिष्ठं द्विदलं दग्धं निष्पावांश्च मसूरिकाम् ।
भावदुष्टं पर्युषितं जग्ध्वा नित्यं कथाव्रती ।९।
वार्ताकं च कलिदं च चिचण्डं मूलकं तथा ।
कूष्माण्डं नालिकेरं च मूलं जग्ध्वा कथाव्रती ।१०।
पलाण्डुं लशुनं हिंगुं गृजनं मादकं हि तत् ।
वस्तुन्यामिषसंज्ञानि वर्जयेद्यः कथाव्रती ।११।
कामादिषड्विकारं च द्विजनां च विनिन्दनम् ।
पतिव्रतासतां निन्दां वर्जयेद्यः कथाव्रती ।१२।
सत्यं शौचं दयां मौनमार्जव विनय तथा ।
औदार्यं मनसश्चैव कुर्यान्नित्यं कथाव्रती ।१३।
निष्कामश्च सकामश्च नियमाच्छ्णुयात्कथाम् ।
सकामः काममाप्नोति निष्कामो मोक्षमाप्नुयात् ।१४।

भले प्रकार कथा में मन लग सके, इसलिये थोड़ा बहुत भोजन अवश्य कर ले । उपवास करने से कथा में मन न लगने के कारण विघ्न होता

है ।८। गरिष्ठ दालें, दग्ध निष्पाव मसूरिका अथवा बासी और दोषयुक्त भोजन को कथाव्रती ग्रहण न करे ।९। बैंगन, कलिंद चिचैड़ा मूली, पेठा आदि शाक मूल का सेवन भी कथाव्रती को नित्य प्रति नहीं करना चाहिए ।१०। प्याज, लहसुन, गाजर तथा मादक द्रव्य और आमिष वस्तुओं का भोजन भी कथाव्रती के लिए त्याज्य कहा गया है ।११। कामादि षट् विकारों का त्याग करे। सत्पुरुषों और ब्राह्मणों की कभी निन्दा न करे तथा पतिव्रता की भी निन्दा न करे ।१२। सत्य, शौच, दया, मौन, आर्जव, विनय, उदारता आदि का पालन कथाव्रती पुरुष को नित्य प्रति करना चाहिए ।१३। निष्काम या सकाम किसी भी भाव से कथा नियमपूर्वक सुननी चाहिए। सकाम पुरुष कामना को और निष्काम श्रवण वाला पुरुष मोक्ष को प्राप्त होता है ।१४।

दरिद्रश्च क्षयी रोगी पापी निर्भाग्य एव च ।
अनपत्योऽपि पुरुषः शृणुयात्सत्कथामिमाम् ।१५।
काकवन्ध्यादयः सप्तविधा अपि खलस्त्रियः ।
स्रवद्गर्भा च या नारी ताभ्यां श्राव्या कथा परा ।१६।
शिवपूजनवत्सम्यक्पुस्तकस्य पुरो मुने ।
पूजा कार्यो सुविधिना वक्तुश्च तदनन्तरम् ।१७।
पुस्तकाच्छादनार्थं हि नवीनं चासनं शुभम् ।
समर्चयेद्दृढं दिव्यं बन्धनार्थं च सूत्रकम् ।१८।
पुराणार्थं प्रयच्छन्ति ये सूत्रं वसनं नवम् ।
योगिनो ज्ञानसम्पन्नास्ते भवंति भवे भवे ।१९।
स्वर्गलोकं समासाद्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ।
स्थित्वा ब्रह्मपदे कल्पं यान्ति शैवपदं ततः ।२०।

दरिद्री, क्षयी, रोग, पापी, भाग्यहीन एवं सन्तानहीन पुरुष भी अपने दुःखों के निवारणार्थ इस कथा को श्रवण करे।१५। सातों प्रकार की बंध्या स्त्रियों अथवा जिन स्त्रीयों का गर्भ-स्राव हो जाता हो उन्हें निरन्तर शिव कथा को श्रवण करना चाहिए ।१६। हे मुने ! शिवजी

का पूजन करने के समान पुस्तक के सम्मुख विधिवत् पूजन करे और फिर वक्ता का पूजन करे ।१७। पुस्तक के आच्छादनार्थ नवीन वस्त्र प्रदान करे और उसे बाँधने के निमित्त सुन्दर रेशमी डोरा देना चाहिए, ।१८। जो पुरुष पुराण के निमित्त नवीन वस्त्र और सूत्र प्रदान करते हैं, वे सभी युगों में योगी और ज्ञान-सम्पन्न होते हैं ।१९। वे स्वर्ग लोक में जाकर वहाँ के अनेक भोगों का उपभोग कर ब्रह्मलोक को प्राप्त होते और कल्प के अन्त में शिवलोक में जाते हैं ।२०।

विरक्तश्च भवेच्छ्रोता परऽह्नि विशेशतः ।
गीता वाच्या शिवेनोक्ता रामचन्द्राय या मुने ।२१।
गृहस्थश्चेद्भवेच्छ्रोता कर्तव्यस्तेन धीमता ।
होमः शुद्धेन हविषा कर्मणस्तस्य शान्तये ।२२।
रुद्रसहितया होमः प्रतिश्लोकेन वा मुने ।
गायत्र्यास्तन्मयत्वाच्च पुराणस्यास्य तत्वतः ।२३।
दोषयोः प्रशमार्थं च न्यूनताधिकताख्ययोः ।
पठेच्च शृणुयाद्भक्तत्या शिवनामसहस्रकम् ।२४।
एवं कृते विधाने च श्रीमच्छिवपुराणकम् ।
संपूर्णफलदं स्याद्वै भुक्तिमुक्ति प्रदायकम् ।२५।

यदि श्रोता विरक्त हो तो द्वितीय दिवस शिव गीता का विशेष करके पाठ करे । उसका उपदेश शिवजी ने श्रीरामचन्द्रजी को दिया था ।२१। यदि श्रोता गृहस्थ हो तो उसे शुद्ध हवि के द्वारा उस कर्म की शान्ति के निमित्त हवन करना चाहिये ।२२। अथवा रुद्र संहिता के प्रत्येक श्लोक से हवन करे या तन्मय गायत्री से अथवा पुराण के तत्व से हवन करे ।२३। न्यूनाधिक दोषों की शान्ति के लिये भक्तिपूर्वक शिव-सहस्र नाम का पाठ करना चाहिये ।२४। इस प्रकार विधानपूर्वक श्रवण करने से शिवपुराण पूर्ण फलदाता होता है तथा भुक्ति और मुक्ति दोनों फलों की प्राप्ति होती है ।२५।

श्री शिवपुराण

विद्येश्वरसंहिता

सूतजी से मुनियों का प्रश्न

आद्यन्तमंगलमजातसमानभावमार्यंतमीशमजरामरमात्मदेवम् ।
पंचाननं प्रबलपंचविनोदशीलं भावयेमनसिशंकरमम्बिकेशम् ॥

धर्मक्षेत्रे महाक्षेत्रे गंगाकालिन्दिसंगमे ।
प्रयागे परमे पुण्ये ब्रह्मलोकस्य वर्त्मनि ।१।
मुनयः शंशितात्मनः सत्यव्रतपरायणाः ।
महौजसो महाभागा महासत्रं वितेनिरे ।२।
तत्र सत्रं समाकर्ण्य व्यासशिष्यो महामुनिः ।
आजगाम मुनीन्द्रद्रुं सूतः पौराणिकोत्तमः ।३।
तं दृष्ट्वा सूतमायांतं हर्षिता मुनयस्तदा ।
चेतसा सुप्रसन्नेन पूजां चक्रुर्यथाविधि ।४।
ततो विनयसंयुक्ताः प्रोचुः सांजलयश्च ते ।
सुप्रसन्ना महात्मनः स्तुतिं कृत्वा यथाविधि ।५।
रोमहर्षण सर्वज्ञ भवान्वै भाग्यगौरवात् ।
पुराणविद्यामखिलां व्यासात्प्रत्यर्थमीयिवान् ।६।
तस्मादाश्चर्य्यभूतानां कथानां त्वं हि भाजनम् ।
रत्नानामुरुसाराणां रत्नाकार इवार्णवः ।७।

व्यासजी ने शिवजी की ब्रह्मत्व प्राप्ति के लिए उपायभूत विद्येश्वर संहिता का वर्णन करने हेतु मंगल विधान किया । सृष्टि के आदि-अन्त में जो मंगलस्वरूप हैं, जिनके समान सम-भाव किसी में नहीं है, जिनमें विश्व स्थित है, जो जरा मृत्यु से रहित, स्वप्रकाश स्वरूप, पंचमुख,

प्रबल पंच महापापों के हरने वाले, भक्तों के मोक्ष में बाधक शब्दादि पंच विषयों को शान्त करने वाले एवं भक्तों के लिए कल्याणकारी पार्वती पति शिवजी का मैं ध्यान करता हूँ। व्यासजी ने कहा—धर्म के उस महान्क्षेत्र में जहाँ गङ्गा और कालिंदी मिली हैं, उस ब्रह्मलोक के मार्गभूत परम पवित्र प्रयाग नाम प्रदेश में ।१। सत्यव्रत में रत, ज्ञानी एव महान् व्रती, अत्यन्त पराक्रमी और महान् भाग्यवान ऋषि दीर्घ यज्ञ का अनुष्ठान करने लगे ।२। व्यासजी के शिष्य महामुनि उस यज्ञ को सुन करके पुराण ज्ञाताओं में सर्वश्रेष्ठ सूतजी उस स्थान में आये ।३। सूतजी को वहाँ आया हुआ देखकर मुनि अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने चित्त से उनका विधिवत् पूजन किया ।४। तब विनय-युक्त होकर वह मुनिजन हाथ जोड़कर उन प्रसन्न हुए यहात्मा का विधिवत् स्तवन करने लगे ।५। हे सर्वज्ञ ! आपने भाग्य से गौरवपूर्वक व्यासजी से सम्पूर्ण पुराण विद्या का अर्थ रहित ज्ञान प्राप्त किया है ।६। इसलिये आप आश्चर्य-भूत कथाओं के उसी प्रकार पात्र हैं, जिस प्रकार श्रेष्ठ रत्नों का स्थान समुद्र है ।७।

यच्च भूतं च भव्यं च यच्चान्यद्वस्तु वर्तते ।
न त्वयाऽविदितं किंचित्त्रिषु लोकेषु विद्यते ।८।
त्वं मद्दिष्टवशादस्य दर्शनार्थं महागतः ।
कुवन्किमपि नः श्रेयो न वृथा गंतुमर्हसि ।९।
तत्त्वं श्रुतं स्म नः सर्वं पूर्वमेव शुभाशुभम् ।
न तृप्तिमधिगच्छामः श्रवणेच्छा मुहुर्मुहुः ।१०।
इदानी मेकमेवास्ति श्रोतव्यं सूत सन्मते ।
तद्रहस्यमपि ब्रूहि यदि तेऽनुग्रही भवेत् ।११।
प्राप्ते कलियुगे घोरे नराः तुण्यविवर्जिताः ।
दुराचाररताः सर्वे सत्यवार्तापराङ्मुखः ।१२।
परापवादनिरताः परद्रव्याभिलाषिणः ।
पर सक्स्त्रीतमनसः परहिंसापरायणाः ।१३।

देहात्मदृष्टयो मूढ़ा नास्तिकाः पशुबुद्धयः ।
मातृपितृकृतद्वेषाः स्त्रीदेवाः कामकिंकराः ।१४।

भूत, भविष्यत, वर्तमान जो कुछ त्रैलोक्य में है, उसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो आपसे छिपा हुआ हो ।८। हमारे सौभाग्य से ही आप इन स्थान में पधारे हैं। आप हमारे मंगल किये बिना, यहाँ से नहीं जायेंगे ।९। पहले भी हमने आपसे अनेकानेक कथाएँ सुनी हैं, फिर भी उनसे हमारी तृप्ति नहीं हुई। हमें उनके बारम्बार श्रवण करने की इच्छा होती है ।१०। हे अत्यन्त मेधावी मुने! इस समय जो रहस्यमय वार्ता सुनने के योग्य हो उसे आप कृपा पूर्वक हमारे प्रति कहिये ।११। इस घोर कलिकाल के उपस्थित होने पर पुण्यहीन मनुष्य ही प्रकट हुए हैं। सबकी प्रीति दुराचर में है तथा सत्य और पुण्य कर्मों से रहित हैं ।१२। परनिन्दा करने में रत रहते हैं। पराये द्रव्य की अभिलाषा और पर-नारियों में चित्त लगाने वाले लोग दूसरों की हिंसा को सदा तत्पर रहते हैं ।१३। देह में आत्मा का भ्रम रखने वाले नास्तिक बुद्धि वाले मूर्ख माता-पिता से द्वेष रखने वाले, काम के किंकर और स्त्री के वशी-भूत रहने वाले हैं ।१४।

विप्रा लोभग्रहग्रस्ता वेदविक्रयजीविनः ।
धनार्जनार्थमभ्यस्तविद्या मदविमोहिताः ।१५।
त्वक्तस्वजातिकर्माणः प्रायशः परवंचकाः ।
त्रिकालसंध्यया हीना ब्रह्मबोधविवर्जिताः ।१६।
अदयाः पंडितंमन्याः स्वाचारव्रतलोपकाः ।
कृष्युद्यमरताः क्रूरस्वभावा मलिनाशयाः ।१७।
क्षत्रियाश्च तथा सर्वे स्वधर्मत्यागशीलिनः ।
असत्संगाः पापरता व्यभिचारपरायणाः ।१८।
अशूरा अरणप्रीताः पलायनपरायणाः ।
कुचौरवृत्तयः शूद्राः कामकिंकरचेतसः ।१९।
शस्त्रास्त्रविद्यया हीना धेनुविप्रावनोज्झिताः ।
शरण्यावनहीनाश्च कामिन्यूतिमृगाः सदा ।२०।

प्रजापालनसद्धर्मविहीना भोगतत्पराः ।
प्रजासंहारका दुष्टा जीवहिंसाकरा मुदाः ।२१।

ब्राह्मण लोभ में फँस रहे हैं, वेदों के विक्रय से आजीविका चलाते हैं, धन के लिए विद्या का अध्ययन करते हैं और विद्या के मद से मोहित हैं, ।१५। अपने स्वाभाविक कर्म का त्याग करने वाले, दूसरों को ठगने वाले, त्रिकाल संध्या से रहित तथा ब्रह्मज्ञान से शून्य हैं ।१६। स्वयं को पण्डित समझने वाले, दया-रहित, आचार और व्रत से हीन, कृषि-कर्म में लगे हुए, क्रूर स्वभाव के तथा मलीन चित्त वाले हैं ।१७। इसी प्रकार क्षत्रियों ने भी अपना धर्म छोड़ रखा है। वे कुसङ्गति में पड़े हुए हैं और पाप कर्म तथा व्यभिचारी परायण हैं ।१८। शूद्रों से प्रीति रखने वाले, कायर, युद्ध में पीठ दिखाने वाले, चोरों की वृत्ति में लगे हुए तथा कामदेव के दास हैं ।१९। शस्त्रास्त्र की विद्या से अनजान, गौ ब्राह्मणों का पालन न करने वाले, शरणागतों को दुत्कारने वाले, कामिनी के लीला हरिण तथा धन से हीन हैं ।२०। प्रजा के पालन रूप श्रेष्ठ धर्म से विमुख, भोगों में संलग्न, प्रजा की हिंसा करने वाले और जीव हिंसा में प्रसन्न रहने वाले हैं ।२१।

वैश्याःसंस्कारहीनास्ते स्वधर्मत्यागशीलिनः ।
कुपथाः स्वार्जनरतास्तुलाकर्मकृवृत्तायः ।२२।
गुरुदेवद्विजातीनां भक्तिहीनाः कुबुद्धयः ।
अभोजितद्विजाः प्रायः कृपणा बद्ध मुष्टयः ।२३।
कामिनीजारभावेषु सुरता मलिनाशयाः ।
लोभमोहविचेतस्काः पूर्तादिषु वृषोज्झिताः ।२४।
तद्वच्छूद्राश्च ये केचिद्ब्राह्मणाचारतत्पराः ।
उज्ज्वलाकृतयो मूढाः स्वधर्मत्यागशीलिनः ।२५।
कर्तारस्तपसां भूयो द्विजतेजोपहारकाः ।
शिश्वल्पमृत्युकाराश्च मंत्रोच्चारपरायणाः ।२६।
शालग्रामशिलादीनां पूजका होमतत्पराः ।
प्रतिकूलविचाराश्च कुटिला द्विजदूषकाः ।२७।

धनवंतः कुकर्माणो विद्यावन्तो विवादिनः ।
आख्यानोपासनाधर्मवक्तारो धर्मलोपकाः ।२८।

वैश्य संस्कारहीन, धर्मविमुख, कुमार्ग से द्रव्योपार्जन में तत्पर, तुला कर्म और कुत्सित आजीविका वाले गुरु-ब्राह्मण की भक्ति से विमुख, ब्राह्मणों को भोजन न कराने वाले बुद्धिहीन, लोभी एवं कंजूस हैं ।२२।२३।। नारियों से जार भाव से रमण करने वाले, अस्वच्छ मन वाले, लोभ-मोह से भ्रमित, पूर्तादि में धर्म का त्याग कर देने वाले हैं ।२४। शूद्र भी अपने धर्म से विमुख हैं। ब्राह्मणों जैसा आचार करने वाले उज्ज्वल आकृति वाले, धर्म से हीन एवं मूढ़ हैं ।२५। तप में संलग्न, ब्राह्मणों का तेज हरने की इच्छा में रत, बालक की अल्प मृत्यु में मारणादि मन्त्रों में चतुर हैं ।२६। शालिग्राम आदि की पूजा करके हवन करने वाले, प्रतिकूल विचार वाले, कुटिल तथा ब्राह्मण द्वेषी हैं ।२७। धनवान, विद्यावान, कुकर्मी, विवादी, कथा, धर्म तथा उपासना का उपदेश करने वाले और धर्म को नष्ट करने वाले हैं ।२८।

सुभूषाकृतयो दंभाः सुदातारो महामदाः ।
विप्रादीन्सेवकान्मत्वा मन्यमाना निजं प्रभुम् ।२९।
स्वधर्मरहिता मूढाः संकरः क्रूरबुद्धयः ।
महाभिमानिनो नित्यं चतुर्वर्णविलोपकाः ।३०।
सुकुलीनन्निजानमत्वा चतुर्वर्णैर्विवर्तनाः ।
सर्ववर्णभ्रष्टकरा मूढाः असत्कर्मकारिणः ।३१।
स्त्रियश्च प्रायसो भ्रष्टा भर्त्रवज्ञानकारिकाः ।
श्वसुरद्रोहकारिण्यो निर्भया मलिनासनाः ।३२।
कुहावभावनिरताः कुशीला स्मरविह्वलाः ।
जारसंगरता नित्यं स्वस्वामिविमुखास्तथा ।३३।
तनया मातृपित्रोश्च भक्तिहीनादुराशयाः ।
अविद्यापाठका नित्यं रोगग्रसितदेहकाः ।३४।
एतेषां नष्टबुद्धीनां स्वधर्मत्यागशीलिनाम् ।
परलोकेऽपीह लोके कथं सूत गतिर्भवेत् ।३५।

राजाओं जैसी चेष्टा वाले, पाखण्डी, दाता के समान आडम्बर करने वाले, महामद से युक्त, ब्राह्मणों को सेवक और स्वयं को स्वामी समझने वाले हैं।२९। अपने धर्म से शून्य, मूढ़, वर्णसंकर क्रूर बुद्धि वाले, घोर अभिमानी तथा चारों वर्णों का लोप करने में निरत हैं।३०। अपने को कुलीन समझते हुए चारों वर्णों की वृत्ति वाले, सभी वर्णों को भ्रष्ट करने वाले हैं।३१। स्त्रियाँ भी अपने स्वामी की आज्ञा पालन करने से विमुख तथा सास-श्वसुर से द्रोह करने वाली हैं।३२। बुरे हाव-भाव वाली, कुत्सत स्वभाव वाली, कामविह्वला, जाट के सङ्ग को चाहने वाली तथा पति-द्रोहणी हैं।३३। कन्या भी माता-पिता को न चाहने वाली, बुरे आशय वाली, अविद्या से घिरी हुई तथा रोग से ग्रसित देह वाली हैं।३४। हे सूतजी ! इन बुद्धिहीन, धर्म से विमुख मनुष्यों को इहलोक और परलोक में कौन-सी गति प्राप्त होगी ? ।३५।

इति चिंताकुलं चित्तं जायते सततं हि न ।
परोपकारसदृशो नास्ति धर्मोऽपरः खलु ।३६।
लघूपायेन येनैषां भवेत्सद्योऽघनाशनम् ।
सर्वसिद्धान्तवित्त्वं हि कृपया तद्वदाधुना ।३७।
इत्याकर्ण्य वचस्तेषां मुनीनां भावितात्मनाम् ।
मनसा शंकरं स्मृत्वा सूतः प्रोवाच तान्मुनीन् ।३८।

हमारा मन इन चिन्ताओं से सदा व्याकुल रहता है। परोपकार के समान विश्व में अन्य कोई धर्म नहीं है।३६। जिस न्यून उपाय से इनका पाप शीघ्र ही मिट जाय उसे कृपा कर कहिये। आप सम्पूर्ण सिद्धान्तों के जानने वाले हैं।३७। व्यासजी ने कहा कि ज्ञानमय आत्मा वाले उन मुनियों के ऐसे वचन सुनकर सूतजी ने मन में शिवजी का स्मरण किया और उन मुनियों से कहने लगे।३८।

॥शिवपुराण द्वारा कलि-कल्मष विध्वंस वर्णन॥

साधु पृष्टं साधवो वस्त्वलोक्यहितकारकम् ।
गुरुं स्मृत्वा भवत्स्नेहाद्वक्ष्ये तच्छ्रूयतादरात् ।१।

वेदांतसारसर्वस्वं पुराणं चैवमुत्तमम् ।
सर्वाघोद्धारकर परत्र परमार्थदम् ।२।
कलिकल्मषविध्वंसि यस्मिञ्छिवयशः परम् ।
विजृम्भते सदा विप्राश्चतुर्वर्गफलप्रदम् ।३।
तस्याध्ययनमात्रण पुराणस्य द्विजोत्तमाः ।
सर्वोत्तमस्य शैवस्य ते यास्यति सुसद्गतिम् ।४।
तावद्विजृम्भते पापं ब्रह्महत्यापुरःसरम् ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति जगत्यहो ।५।
तावत्कलिमहोत्पाताः संचरिष्यंति निर्भयोः ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति जगत्यहो ।६।
तावत्सर्वाणि शास्त्राणि विवदंते परस्परम् ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यहि जगत्यहो ।७।

सूतजी ने कहा—हे महात्माओ ! आपने उत्तम प्रश्न किया है। इसके द्वारा विश्व का कल्याण होगा। मैं गुरुदेव का स्मरण कर स्नेहपूर्वक कहता हूं तुम आदर सहित श्रवण करो ।१। वेदान्त का सार रूप शिव पुराण सभी पापों को नष्ट करने वाला तथा परलोक में परमार्थ को प्रदान करने वाला है ।२। उसमें शिवजी का यश है, वह कलियुग के पापों को दूर कर देता है। हे विप्रो ! यह पुराण सदा चारों वर्ग का फल प्राप्त कराने वाला है ।३। हे विप्रगण ! उस पुराण का अध्ययन करने मात्र से ही प्राणी को सर्वोत्तम सद्गति की प्राप्ति हो जाती है ।४। ब्रह्म-हत्या आदि के पाप भी तभी तक विद्यमान रहते हैं, जब तक संसार में आश्चर्य रूप शिव पुराण का प्राकट्य नहीं होता ।५। कलियुग के घोर उत्पात भी तभी तक टिक पाते हैं, जब तक कि संसार में शिव पुराण का प्राकट्य नहीं हो जाता ।६। सभी शस्त्र तब तक परस्पर में विवाद करते प्रतीत होते हैं, जब तक कि विश्व में शिव पुराण का उदय नहीं हो जाता ।७।

तावत्स्वरूपं दुर्बोधं शिवस्य महतामपि ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति जगत्यहो ।८।

तावद्यमभटाः क्रूराः संचरिष्यंति निर्भयाः ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति जगत्यहो ।९।
तावत्सर्वाणि तीर्थानि विवदंते महीतले ।
यावच्छिवपुराण हि नोदेष्यति जगत्यहो ।१०।
तावत्सर्वे मुदा मंत्रा विवदंते महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले ।११।
तावत्सर्वाणि क्षेत्राणि विवदंते महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले ।१२।
तावत्सर्वाणि पीठानि विवदंते महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले ।१३।
तावत्सर्वाणि दानानि विवदंते महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले ।१४।

शिवजी का स्वरूप महान् पुरुषों को भी तभी तक दुर्बोध दिखाई देता है, जब तक संसार में शिव पुराण का प्राकट्य नहीं हो जाता ।८। यमराज के क्रूर दूत भी तभी तक निर्भय विचरण करते हैं, जब तक कि यह आश्चर्य स्वरूप सूर्य रूपी पुराण उदय नहीं हो जाता ।९। सम्पूर्ण तीर्थ भी पृथिवी में तभी तक विवाद करते हैं, जब तक कि विश्व में शिव पुराण प्रकट नहीं हो जाता ।१०। सब मन्त्र तभी तक इस लोक में विवादास्पद प्रतीत होते हैं जब तक कि शिव पुराण का उदय नहीं हो जाता ।११। सब क्षेत्र पृथिवी में तभी तक विवादग्रस्त रहते हैं, जब तक विश्व में शिव पुराण का प्राकट्य नहीं हो जाता ।१२। सम्पूर्ण पीठ भी पृथिवी पर तभी विवाद करते हैं, जब तक कि संसार में शिव पुराण का उदय नहीं हो जाता ।१३। सब दान तभी तक पृथिवी पर विवादास्पद हैं जब तक कि शिवपुराण का प्राकट्य संसार में नहीं हो जाता ।१४।

तावत्सर्व च ते देवा विवदंते महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले ।१५।
तावत्सर्वे च सिद्धान्ता विवदंते महीतले ।
यावच्छिवपुराण हि नोदेष्यति महीतले ।१६।

अस्य शैवपुराणस्य कीर्तनश्रवणाद्द्विजाः ।
फलं वक्तुं न शक्नोमि कात्स्न्र्येन मुनिसत्तमाः ।१७।
तथापि तस्य माहात्म्यं वक्ष्ये किंचित्तु वोऽनघाः ।
चित्तमाधाय शृणुत व्यासेनोक्तं पुरा मम ।१८।
एतच्छिवपुराणं हि श्लोकं श्लोकार्द्धमेव च ।
यः पठेत्भक्तिसंयुक्तः स पापान्मुच्यतेक्षणात् ।१९।
एतच्छिवपुराणं हि यः प्रत्यहमतद्रितः ।
यथाशक्ति पठेद्भक्त्या स जीवन्मुक्त उच्यते ।२०।
एतच्छिवपुराणं हि यो भक्त्यार्चयते सदा ।
दिने दिनेऽश्वमेधस्य फल प्राप्नोत्यसशयम् ।२१।

पृथिवी में यह देवता भी तभी तक विवाद करते हैं, जब तक कि शिव पुराण का उदय इस विश्व में नहीं हो जाता ।१५। सभी सिद्धान्त पृथिवी में तभी तक विवादास्पद रहते हैं, जब तक कि शिव पुराण का उदय इस विश्व में नहीं हो जाता ।१६। हे विप्रगण ! इस शिव पुराण के सुनने या कीर्तन करने से जिस फल की प्राप्ति होती है, उसका पूरी तरह वर्णन मैं नहीं कर सकता ।१७। हे पापरहित ! मैं तुम्हारे प्रति उसका कुछ माहात्म्य कहता हूं । इसे मुझे व्यासजी ने कहा था, तुम उसे सावधान चित्त से श्रवण करो ।१८। इस शिव पुराण का एक या आधा श्लोक भी जो भक्ति पूर्वक श्रवण करते हैं, वे उसी समय पापों से मुक्त हो जाते हैं ।१९। इस पुराण का आलस्य त्याग कर प्रतिदिन भक्ति सहित यथाशक्ति पाठ करते हैं, वे जीवनमुक्त हो जाते हैं । ।२०। भक्ति सहित जो पुरुष इस शिवपुराण का पूजन करते हैं, वे दिनों अश्वमेध के फल को प्राप्त करते हैं, इसमें संदेह नहीं है ।२१।

एतच्छिवपुराणं यः साधारणपदेच्छया ।
अन्यतः शृणुयात्सोऽपि मत्तो सुच्येत पातकात् ।२२।
एतच्छिवपुराणं यो नमस्कुर्यादूरतः ।
सर्वदेवार्चनफलं स प्राप्नोति न संशयः ।२३।
एतच्छिवपुराणं हि चतुर्दश्यामुपोषितः ।

शिवभक्तसभायां यो व्याकरोति स उत्तमः ।२४।
उपोषितश्चतुर्दश्यां रात्रौ जागरणान्वितः ।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि तस्त पुण्यं वदाम्यहम् ।२५।
कुरुक्षेत्रादिनिखिलपुण्यतीर्थेष्वनेकशः ।
आत्मतुल्यधनं सूर्यग्रहणे सर्वतोमुखे ।२६।
विप्रेभ्यो व्यासमुख्येभ्यो दत्त्वा यत्फलमश्नुते ।
तत्फलं संभवेत्तस्य सत्यं सत्यं न संशयः ।२७।
एतच्छिवपुराणं हि गायते योऽप्यहर्निशम् ।
आज्ञां तस्य प्रतीक्षन्देवा इन्द्रपुरोगमाः ।२८।

जो इस शिवपुराण के साधारण पद के अक्षरों को भी दूर से सुनता है, वह मत्त व्यक्ति भी पापा-दोष से मुक्त हो जाता है ।२२। इस शिव पुराण के समीप जाकर जो इसे नमस्कार करते हैं, वे देवार्चन के फल को प्राप्त होते हैं, इसमें संशय नहीं है ।२३। चतुर्दशी के दिन व्रत रखकर सभा में जो पुरुष शिवपुराण का व्याख्य ानकरते हैं, वे पुरुष अत्यन्त श्रेष्ठ हैं ।२४। चतुर्दशी के दिन व्रत पूर्वक रात्रि में जो पुरुष इसे पढ़ते या सुनते हैं, उनके पुण्य का फल मैं तुम्हारे प्रति कहता हूं ।२५। कुरुक्षेत्र आदि अनेक पुण्य स्थानों में जाकर सूर्य ग्रहण के अवसर पर अपने समान धन कथा-वाचक ब्राह्मणों को देने पर जो फल प्राप्त होता है, वह फल कथा-श्रवण करने वालों को अवश्य प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं है ।२६-२७। जो मनुष्य इस पुराण को दिन रात्रि निरन्तर पढ़ते हैं उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा इन्द्रादि देवतागण भी सदा करते रहते हैं ।२८।

एतच्छिवपुराणं यः पठञ्छृण्वन्हि नित्यशः ।
यद्यत्करोति सत्कर्म तत्कोटिगुणितं भवेत् ।२९।
समाहितः पठेद्यस्तु तत्र श्रीरुद्रसंहिताम् ।
स ब्रह्मघ्नोऽपि पूतात्मा त्रिभिरेवदिनैभवेत् ।३०।
तां रुद्रसंहितां यस्तु भैरवप्रतिमांतिके ।
त्रिः पठेत्प्रत्यहं मौनी स कामानखिलांल्लभेत् ।३१।

तां रुद्रसंहिता यस्तु संपठेद्वटबिल्वयोः ।
प्रदक्षिणां प्रकुर्वाणो ब्रह्महत्या निवर्तते ।३२।
कैलाससंहिता तत्र ततोऽपि परमा स्मृता ।
ब्रह्मस्वरूपिणो साक्षात्प्रणवार्थप्रकाशिका ।३३।
कैलाशसंहितायास्तु माहात्म्यं वेत्ति शङ्करः ।
कृत्स्नं तदर्द्धं व्यासश्च तदर्द्धं वेद्म्यहं द्विजाः ।३४।
तत्र किंचित्प्रवक्ष्यामि कृत्स्नं वक्तुं न शक्यते ।
यज्ज्ञात्वा तत्क्षणाल्लोकश्चित्तशुद्धिमवाप्नुयात् ।३५।

जो पुरुष इस शिवपुराण का नित्य पाठ एवं श्रवण करते हैं, उनके द्वारा किये सत्कर्मों का फल कोटि गुणा होता है ।२९। इसको रुद्र संहिता को सावधानी पूर्वक पढ़ने वाला मनुष्य तीन दिन के भीतर ही ब्रह्महत्या से छुटकारा प्राप्त कर लेता है ।३०। जो पुरुष इसकी रुद्र संहिता का भैरव जी की मूर्ति के समक्ष प्रतिदिन तीन बार मौन होकर पाठ करता है, वह अपने मनोरथों को प्राप्त होता है ।३१। वट और विल्व की प्रदक्षिणा करके जो कोई इसकी रुद्र संहिताका पाठ करता है, उसको ब्रह्महत्या से छुटकारा मिल जाता है ।३२। इसके अतिरिक्त कैलाश संहिता का इससे भी अधिक माहात्म्य है, वह सहिता साक्षात् ब्रह्म-स्वरूपिणी है तथा ओंकार के अर्थ को प्रकाशित करने वाली है ।३। हे विप्रो ! कैलाश संहिता का सम्पूर्ण माहात्म्य स्वयं शिवजी जानते हैं। उनसे आधा व्यासजी और व्याजी से आधा मैं जानता हूं ।३४। मैं सम्पूर्ण तो नहीं कह सकता, उसमें से कुछ अंश कहता हूं, उसका ज्ञान होने से तत्काल ही चित्त शुद्ध हो जाता है ।३५।

न नाशयति यत्पापं सा रौद्री संहिता द्विजाः ।
नन्न पश्याम्यहं लोके मार्गमाणोऽपि सर्वदा ।३६।
शिवेनोपनिषत्सिंधुमन्थनोत्पादितां मुदा ।
कुमारायार्पितां तां वै सुधां पीत्वामरी भवेत् ।३७।
ब्रह्महत्यादिपापानां निष्कृतिं कर्तुमुद्यतः ।
मासमात्रं संहितां तां पठित्वा मुच्यते ततः ।३८।

दुष्प्रतिग्रहदुर्भोज्यदुरालापादिसंभवम् ।
पापं सकृत्कीर्तनेन संहिता सा विनाशयेत् ।३६।
शिवालये बिल्ववने संहितां तां पठेत्तु यः ।
स यत्फलमवाप्नोति तद्वाचोऽपि न गोचरे ।४०।
संहितां तां पठन्भक्त्या यः श्राद्धे भोजयेद्द्विजान् ।
तस्य ये पितरः सर्वे यांति शंभोः परं पदम् ।४१।
चतुर्दश्यां निराहारो यः पठेत्संहितां च ताम् ।
बिल्वमूले शिवः साक्षात्स देवैश्च प्रपूज्यते ।४२।

हे मुनिवरो ! जिस पाप नाश रुद्र संहिता नहीं करती, वह तो ढूँढने के लिए भी उपलब्ध नहीं हो पाता ।३६। वह संहिता शिवजी ने उपनिषद् रूपी समुद्र से मथ कर निकाली और कुमार को देदी । उसके ज्ञानामृत का पान करने पर जीव अमृत्व को प्राप्त होता है ।३७। ब्रह्म-हत्या आदि पापों से छुटकारा प्राप्त करने के लिए एक महिने तक पाठ करने वाला प्राणी अपने पापों से छूट जाता है ।३८। दुष्प्रतिग्रह, दुर्भोजन और दुर्वचन आदि के द्वारा उत्पन्न पाप इस संहिता के पाठ करने के फलस्वरूप नाश को प्राप्त होता है ।३९। किसी शिवालय में अथवा बिल्व पत्र के मन में इस संहिता का भक्तिभाव पूर्वक पाठ करने वाले को अकथनीय फल की प्राप्ति होती है ।४०। इस संहिता का भक्ति पूर्वक पाठ करते हुए श्राद्ध में ब्राह्मणों को भोजन कराने वाले के सभी पितर शिवजी के लोक को गमन करने हैं ।४१। चतुर्दशी के दिन निरा-हार व्रतपूर्वक जो इस संहिता का पाठ करता है तथा जो विल्व-मूल में पढ़ता है, वह साक्षात् शिव रूप से पूजित होता है । देवता भी उसे पूजते हैं ।४२।

अप्यन्याः संहितास्तत्र सर्वकामफलप्रदाः ।
उभे विशिष्ट विज्ञेये लीलाविज्ञानपूरिते ।४३।
तदिदं शैवममाख्यातं पुराणं वेदसंमितम् ।
निर्मितं तच्छिवेनैव प्रथमं ब्रह्मसंमितम् ।४४।
ससप्तसंहित दिव्यं पुराणं शिवसंज्ञकम् ।

वरीवर्ति ब्रह्मतुल्यं सर्वोपरि गतिप्रदम् ।४५।
एतच्छिवपुराणं हि सप्तसंहितमादरात् ।
परिपूर्णं पठेद्यस्तु स जीवन्मुक्त उच्यते ।४६।
शैवंपुराणममलंशिवकीर्तितं तद्व्यासेनशैवप्रवरेणचसंगृहीतम् ।
संक्षेपतःसकलजीवगुणोपकारं तापत्रयघ्नमतुलंशिवदंसतांहि ।४७
विकैतवो धर्म इह प्रगीतो वेदान्तविज्ञानमयः प्रधानः ।
अमत्सरांतर्बुधवेद्यवस्तुसत्सक्लृप्तमन्त्रौघत्रिवर्गपुक्तम् ।४८।
शैवंपुराणतिलकंखलुसत्पुराणंवेदांतवेदविलसत्परवस्तुगीतम् ।
यौवेंपठेच्चश्रृणुयात्परमादरेणशंभुप्रितःसहिलभेत्परमांगतिवें ।।

और दूसरी संहिता भी सम्पूर्ण कामनाओं और फलों के देने वाली हैं। इन दोनों में ही शिवजी की श्रेष्ठ लीला का वर्णन है, इसलिए दोनों ही श्रेष्ठ हैं ।४३। इस शिव पुराण को वेदसम्मत माना है। इस पुराण का निर्माण पूर्व काल में भगवान् शिवजी ने स्वयं किया था ।४४। यह दिव्य शिव पुराण सात संहिताओं से युक्त सर्वोपरि प्रतिष्ठित है। यह सर्वश्रेष्ठ गति देने वाला और ब्रह्मा के समान है ।४५। इस शिव पुराण की सातों संहिताओं को पूर्ण रूप से आदर पूर्वक पढ़ने वाला मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है ।४६। इस निर्मल पुराण को शिवजी ने कथन किया है तथा शिव-धर्मों में कुशल व्यास जी ने इसका संग्रह किया तथा सम्पूर्ण जीवों के हितार्थ संक्षिप्त किया। यह तीनों पापों को नष्ट करने वाला तथा सत्पुरुषों के लिए मंगलदायक है ।४७। इसमें छलरहित धर्म का वर्णन है। यह वेदान्त के विज्ञान से युक्त एवं प्रमुख है। यह मत्सरता से रहित विज्ञों के लिए ज्ञातव्य है। सत्पुरुषों के कृत्यों से सम्पन्न तथा त्रिवर्ग का दाता है ।४८। यह शिवपुराण सत्पुराणों में तिलक के समान है। इसमें वेद वेदान्त में वर्णित सद् वस्तु का वर्णन किया गया है। इस पुराण को आदरपूर्वक पढ़ने और श्रवण करने वाला मनुष्य शिवजी का प्रीतिपात्र होकर परम गति को प्राप्त होता है ।४९।

।। साध्य-साधन विचार ।।

इत्याकर्ण्य वचः सौतं प्रोचुस्ते परमर्षयः ।

वेदान्तसारसर्वस्वं पुराणं श्रावयाद्भुतम् ।१।
इति श्रुत्वा मुनीनां स वचनं सुप्रहर्षितः ।
संस्मरञ्छंकरं सूतःप्रोवाच मुनिसत्तमान् ।२।
शृण्वंतु ऋषयः सर्वे स्मृत्वा शिवमनामयम् ।
पुराणप्रवणं शैवं पुराणं वेदसारजम् ।३।
यत्र गीतं त्रिकं प्रीत्या भक्तिज्ञानविरागकम् ।४।
वेदांतवेद्यं तद्वस्तु विशेषेण प्रवर्णितम् ।५।
शृण्वन्तु ऋषयः सर्वे पुराणं वेदसारजम् ।
पुराकालेन महता कल्पेऽतीते पुनः पुनः ।६।
अस्मिन्नुपस्थिते कल्पे प्रवृत्ते सृष्टिकर्मणि ।
मुनीनां षडकुलोनानां ब्रुवतामितरेतरम् ।७।

व्यास जी ने कहा—सूतजी के इस प्रकार वचन सुनकर वे परम ऋषि बोले कि आप वेदान्त सार का सर्वस्वरूप पुराण हमारे प्रति कहिये ।१। उन श्रेष्ठ मुनियों की बात सुनकर सूतजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और भगवान् शंकर का स्मरण करते हुए बोले ।२। सूतजी ने कहा—मुनियों ! मैं अनामय भगवान् शिव को प्रणाम कर वेदों के सार रूप एवं पुराणोंमें सर्वश्रेष्ठ शिवपुराण तुम्हारे प्रति कहता हूं, ध्यान देकर सुनो ।३। उस शिवपुराण में प्रीति सहित भक्ति ज्ञान और वैराग्य का वर्णन किया गया है और विशेष करके वेदान्त के द्वारा ज्ञातव्य सद् वस्तु का वर्णन इसमें हुआ है ।४-५। सूतजी ने कहा—हे ऋषियो ! वेद के सार रूप शिव पुराण का श्रवण करो । प्राचीन काल में इस महान् कल्प के बार-बार व्यतीत होने पर इस श्वेत वाराह कल्प के होने तथा सृष्टि की उत्पत्ति होने के विषय में त्रिवेणी के समीप षटकुल में उत्पन्न हुए मुनियों में पारस्परिक विवाद चला ।६-७।

इदं परिमदं नेति विवादः सुमहानभूत् ।
तेऽभिजग्मुर्विधातार ब्रह्माणं प्रष्टुमव्ययम् ।८।
वाग्भिर्विनयगर्भाभिः सर्वेः प्रांजलयाऽब्रूवन् ।
त्वं हि सर्व जगद्धाता सर्व कारणकारणम् ।९।

कः पुमान्सर्वतत्वेभ्यः पुराणः परतः परः ।
यतो वाचो निवर्तंते अप्राप्य मनसा सह ।१०।
यस्मात्सर्वमिदं ब्रह्माविष्णु रुद्रेंद्रपूर्वकम् ।
सहभूतेंद्रियै सर्वं प्रथमं संप्रसूयते ।११।
एष देवो महादेवः सर्वज्ञो जगदीश्वरः ।
अयं तु परया भक्त्या दृश्यते नान्यथा क्वचित ।१२।
रुद्रो हरिर्हरश्चैव तथाऽन्ये च सुरेश्वराः ।
भक्त्या परमया तस्य नित्यं दर्शनकांक्षिणः ।१३।
बहुनाऽत्र किमुक्तेन शिवे भक्त्या विमुच्यते ।
प्रसादाद्देवताभक्तिः प्रसादो भक्तिसंभवः ।
यथेहांकुरतो बीजं बीजतो वा यथांकुरः ।१४।

वही 'पर' है यहीं 'ब्रह्म' है, ऐसा नहीं है, इत्यादि प्रकार से अत्यन्त विवाद होने लगा, तब वे सब अविनाशी ब्रह्माजी से यह प्रश्न लेकर उनके समीप गये ।८। वहाँ जाकर सबने विनययुक्त वाणी में हाथ जोड़ कर कहा कि तुम ही सम्पूर्ण विश्व के विधाता तथा कारण के भी कारण हो ।९। वह कौन है जो पुराण-पुरुष तथा प्रकृति और महत्व से उत्पन्न हुए तत्वों से परे हैं, जिसके निकट मन वाणी की पहुँच नहीं है । इस पर ब्रह्माजी ने कहा कि जिसके प्राप्त न होने पर मन सहित वाणी भी निवृत हो जाती है ।१०। जिससे ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र भूतेन्द्रियों सहित प्रथम प्रकट होते हैं, वही देव महादेव सम्पूर्ण विश्व के अधिपति और सर्वज्ञ हैं। यह शिवजी परमभक्ति से दिखाई देते हैं, अन्यथा नहीं ।११-१२। रुद्र, हरि, हर तथा अन्य देवेश्वर भी उनके दर्शन की परम भक्तिपूर्वक ही इच्छा करते हैं । उन शिवजी की भक्ति करने वाला प्राणी मोक्ष को प्राप्त हो जाता है । प्रसाद से भक्ति और भक्ति से प्रसाद की प्राप्ति होती है । उसी प्रकार जैसे अंकुर से बीज उत्पन्न होता और बीज से अंकुर की उत्पत्ति होती है ।१३-१४।

तस्मादीशप्रासादार्थं यूयं गत्वा भुवं द्विजाः ।
दीर्घसत्रं समारुध्वं यूयं वर्षसहस्रकम् ।१५।

अमुष्यैवाध्वरेशस्य शिवस्यैव प्रसादतः ।
वेदोक्तविद्यासारं तु जायते साध्यसाधनम् ।१६।
अथ किं परमं साध्यं किं वा तत्साधनं परम् ।
साधकः कीदृशस्तत्र तदिदं ब्रूहि तत्वतः ।१७।
साध्यं शिवपदप्राप्तिः साधनं तस्य सेवनम् ।
साधकस्तत्प्रसादाद्यो नित्यादिफलनिस्पृहः ।१८।
कर्म कृत्वा तु वेदोक्तं तदर्पितमहाफलम् ।
परमेशपदप्राप्तिः सालोक्यादिक्रमात्ततः ।१९।
तत्तद्भक्त्यनुसारेण सर्वेषां परमं फलम् ।
तत्साधनं बहुविधं साक्षादीशेन बोधितम् ।२०।
संक्षिप्य तत्र वः सारं साधनं प्रब्रवीम्यहम् ।
श्रोत्रेण श्रवणं तस्य वचसा कीर्तनं तथा ।२१।

हे ब्राह्मणो ! इस कारण शिवजी को प्रसन्न करने के लिए हजार वर्ष वाले दीर्घ सत्र यज्ञ का अनुष्ठान करो ।१५। इसी यज्ञ में भगवान् शंकर की प्रसन्नता प्राप्त होने पर वेदोक्त विद्या का सार एवं साध्य के साधक का ज्ञान हो जायगा ।१६। मुनियों ने कहा—परम साध्य क्या है ? उसका साधन क्या है ? साधक के लक्षण क्या हैं ? इन प्रश्नों का तत्त्व रूप से समाधान कीजिए । ।१७। ब्रह्माजी ने कहा—शिवपद की प्राप्ति साध्य और उनकी सेवा ही साधन है । नित्य नैमित्तिक कर्मों के फल रूप स्वर्ण आदि की स्पृहा न करने वाला उनके प्रसाद से ही साधक हो पाता है ।१८। वेदोक्त कर्म का जो फल परमपद की प्राप्ति के लिए शिवजी को समर्पित किया जाता है, उसके क्रम से ही सायुज्य आदि पद की प्राप्ति होती है ।१९। भक्ति के अनुसात ही सबको परम फल की प्राप्ति होती है । उनके अनेक प्रकार के साधन स्वयं भगवान् शंकर ने कहे हैं ।२०। उनको संक्षिप्त रूप में सारमात्र ही तुम्हारे प्रति कहता हूं । उनका गुण कानों द्वारा श्रवण करे तथा वाणी से कीर्तन करे ।२१।

मनसा मननं तस्य महासाधनमुच्यते ।
श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च मंतव्यश्च महेश्वरः ।२२।

इति श्रुतिः प्रमाणं नः साधने नामुना परम् ।
साध्यं व्रजत सर्वार्थसाधनैकपरायणाः ।२३।
प्रत्यक्षं चक्षुषा दृष्ट्वा तत्र लोकः प्रवर्तते ।
अप्रत्यक्षं हि सर्वत्र ज्ञात्वा श्रोत्रेण चेष्टते ।२४।
तस्माच्छ्रवणमेवादौ श्रुत्वा गुरुमुखाद्बुधः ।
ततः संसाधयेदन्यत्कीर्तनं मननं सुधीः ।२५।
क्रमान्मननपर्यंते साधनेऽस्मिन्सुसाधिते ।
शिवयोगी भवेत्तेन सालोक्यादिक्रमाच्छनैः ।२६।
सर्वांगव्याधयः पश्चात्सर्वानंदश्च लीयते ।
अभ्यासात्क्लेशमेतद्वै पश्चादाद्यंतमंगलम् ।२७।

मन द्वारा मनन करे, यही महान् साधन कहा गया है। भगवान् शंकर के गुणों का श्रवण, कीर्तन और मनन करे ।२२। श्रुति ही इसमें प्रमाण है। इससे परे अन्य कोई साधन नहीं है । इसलिए सभी प्रकार से शिव के परायण होकर साध्य की प्राप्ति करे ।२३। वेद में आत्मा को देखने, सुनने तथा प्रथम देखकर फिर सुनने को कहा है, तो पहले देखे बिना किस प्रकार सुने ? इसका समाधान है कि नेत्रों द्वारा देखकर ही पदार्थ में प्रवृत्ति होती है परन्तु, उसके सर्वत्र अप्रत्यक्ष होने से श्रवण से ही आरम्भ करना उचित है ।२४। बुद्धिमान मनुष्य पहले गुरु-मुख से उसको सुने, फिर कीर्तन और मनन रूप साधक करे ।२५। क्रमपूर्वक जब मनन का साधन हो जायगा तब शिव-योग की प्राप्ति होगी और शिवजी की सालोक्य आदि मुक्ति की प्राप्ति होगी ।२६। पहिले सम्पूर्ण अङ्ग की व्याधि और फिर सर्व आनन्द भी ब्रह्म में लीन हो जाता है। जब तक अभ्यास नहीं होता तब तक साधन में कष्ट प्रतीत होता है। फिर आदि और अन्त में मंगल होता है ।२७।

।। शिवरात्रि व्रत का महाफल ।।

तत्रांतरे तौ च नाथं प्रणम्य विधिमाधवौ ।
बद्धांजलिपुटौ तूष्णीं तस्थतुर्दक्षवामगौ ।१।

तत्र संस्थाप्य तौ देवं सकुटुंबं वरासने ।
पूजहामासतुः पूज्यं पुण्यैः पुरुषवस्तुभिः ।२।
तुष्टोऽहमद्य यां वत्सौ पूजयाऽस्मिन्महादिने ।३।
दिनमेतत्ततः पुण्यं भविष्यति महत्तरम् ।
शिवरात्रिरिति ख्याता तिथिरेषा मम प्रिया ।४।
एतत्काले तुः यः कुर्यात्पूजां मल्लिगवेरयोः ।
कुर्यात्स जगतः कृत्यं स्थितिसर्गादिमाकंपुमान् ।५।
शिवरात्रावहोरात्रं निराहारो जितेन्द्रियः ।
अर्चयेद्वा यथान्यायं यथाबलवंचकः ।६।
यत्फलं मम पूजायां वर्षमेक निरन्तरम् ।
तत्फलं लभते सद्यः शिवरात्रौ मदर्चनात् ।७।

इस समय ब्रह्मा, विष्णु ने शंकर को प्रमाण कर, हाथ जोड़कर तथा मौन रहते हुए उनके दाँये और बाँये भाग में स्थित हो, उन दोनों ने सकुटुम्ब देव को श्रेष्ठ आसन मर प्रतिष्ठित कराकर पुरुषों के योग्य पवित्र पदार्थ से उनकी पूजा की ।१-२। भक्ति की वृद्धि करने वाले शिवजी ने विनम्र ब्रह्मा और विष्णु से प्रसन्न होकर कहा । वे बोले—हे वत्स ! आज मैं इस महा दिवस में तुम्हारे पूजन और उत्सव से प्रसन्न हुआ हुं । यह दिवस महा पवित्र होगा और यह तिथि हमारी परम प्रिय शिवरात्रि होगी ।३-४। इस समय जो हमारे लिंग का पूजन करेगा, वह पुरुष जगत में स्थित सर्गादि कर्मों को करने में समर्थ होगा ।५। जो पुरुष जितेन्द्रिय रहकर एक दिन रात्रि निराहार रहकर यथाशक्ति प्रपंच त्याग कर पूजा करेगा ।६। निरंतर एक वर्ष तक मेरा पूजन करने से जिस फल की प्राप्ति होती है, वह फल केवल एक शिव रात्रि के पूजन से मिल जायगा ।७।

मद्धर्मवृद्धिकालोऽयं चन्द्रकाल इवांबुधेः ।
प्रतिष्ठाद्युत्सवो यत्र मामको मंगलायनः ।८।
यत्पुनः स्तंभरूपेण स्वाविरासमहं पुरा ।
स कालो मार्गशीर्षे तु स्यादार्द्रार्क्षसंभकौ ।९।

आर्द्रायां मार्गशीर्षे तु यः पश्येन्मामुमासखम् ।
मद्वेरमपि वा लिंगं स गुहादपि मे प्रियः ।१०।
अलं दर्शनमात्रेण फलं तस्मिन्दिने शुभे ।
अभ्यर्चनं चेदधिकं फलं वाचामगोचरम् ।११।
रणरंगतलेऽमुष्मिन्यदहं लिंगवर्ष्मणा ।
जृम्भितो लिंगवत्तस्माल्लिंगस्थानमिदं भवेत् ।१२।

जैसे चन्द्रमा को देखकर समुद्र बढ़ता है, वैसे ही मेरी वृद्धि का यही समय है। जहाँ-जहाँ मङ्गल को देने वाले मेरी प्रतिष्ठा आदि उत्सव होते हैं ।८। और जो स्तम्भ रूप से मेरा आविर्भाव हुआ है, यह समय मार्ग शीर्ष में आर्द्रा नक्षत्र से युक्त है ।९। मार्गशीर्ष में आर्द्रा नक्षत्र में पार्वती सहित जो मेरा लिंग का दर्शन करता है, वह पुरुष मुझे कार्तिकेय से भी अधिक प्रिय है ।१०। उस श्रेष्ठ दिवस में दर्शन से ही अधिक फल की प्राप्ति होती है। उस दिन पूजन करने से होने वाले महाफल का वर्णन वाणी से नहीं हो सकता ।११। इस रणभूमि में मैं लिंग-देह सहित प्रकट हुआ हूं, इसलिये यह लिंग स्थान कहा जायगा ।१२।

रथोत्सवादिकल्याणं जनावसं तु सर्वतः ।
अत्र दत्तं हुतं जप्तं सर्वं कोटिगुणं भवेत् ।१३।
मत्क्षेत्रादपि सर्वस्मात्क्षेत्रमेतन्महत्तरम् ।
अत्र संस्मृतिमात्रेण मुक्तिर्भवति देहिनाम् ।१४।
तस्मान्महत्तरमिदं क्षेत्रमत्यंतशोभनम् ।
सर्वकल्याणसंपूर्णं सर्वमुक्तिकरं शुभम् ।१५।
अर्चयित्वाऽत्र मामेव लिंगे लिंगिनमीश्वरम् ।
सालोक्यं चैव सामीप्यं सारूप्यं सार्ष्टिरेव च ।१६।
सायुज्यमिति पंचैते क्रियादीनां फलं मतम् ।
सर्वेऽपि यूयं सकलं प्राप्स्यथाशु मनोरथम् ।१७।

यह स्थान रथ यात्रा के उत्सव और निवासस्थान योग्य होगा। यहाँ किया हुआ जप, तप, हवन साधारण से कोटि से गुणा होगा ।१३। यह

स्थान हमारे सब क्षेत्रों में श्रेष्ठ होगा। यहाँ मेरा स्मरण करने मात्र से प्राणी को मोक्ष की प्राप्ति होगी।१४। इसलिये यह क्षेत्र महान् और अत्यन्त शोभा युक्त होगा। सब प्रकार के कल्याण देने वाला तथा मोक्ष प्रदायक होगा।१५। यहाँ जो व्यक्ति लिंग में मुझ लिंगेश्वर की भावना से पूजन करेंगे, उन्हें सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सार्ष्टि तथा सायुज्य यह पाँचों प्रकार की मुक्ति का फल प्राप्त हो जायगा और यहाँ पूजन करने से तुम्हें भी सब मनोरथों की प्राप्ति होगी।१६-१७।

॥ ब्रह्मा-विष्णु को पंचकृत्य तथा ओंकार का उपदेश ॥

सर्गादिपंचकृत्यस्यलक्षणं ब्रूहि नौ प्रभो।
मत्कृत्यबोधन गुह्य कृपया प्रब्रवीमि वाम्।१।
सृष्टिः स्थितिश्च संहारस्तिरोभावोऽत्यनुग्रहः।
पंचैव मे जगत्कृत्यं नित्यसिद्धमजाच्युतौ।२।
सर्गः संसारसंरभस्तत्प्रतिष्ठा स्थितिर्मता।
संहारो मर्दन तस्य तिरोभावस्तदुत्क्रमः।३।
तन्मोक्षोऽनुग्रहस्तन्मे कृत्यमेवं हि पंचकम्।
कृत्यमेतद्वहत्यन्तस्तूष्णीं गोपुरवित्वक्त्।४।
सर्गादि यच्चतुः कृत्य संसारपरिजृम्भणनम्।
पंचमं मुक्तिहेतुर्वै नित्यं मयि च सुस्थिरम्।५।
तदिद पंचभूतेषु दृश्यते मामकैर्जनैं।
सृष्टिर्भूमौ स्थितिस्तोये सहारः पावके तथा।६।
तिरोभावोऽनिले तद्वदनुग्रह इहांवरे।
सृज्यते धरया सर्वमद्भिः सर्वं प्रवर्द्धते।७।

ब्रह्मा और विष्णु ने कहा—हे प्रभो! सर्गादि पंच-कृत्य का लक्षण हम से कहें। शिवजी ने कहा–हमारा कृत्य और ज्ञान दुर्लभ है तो भी कृपा करके उसे मैं तुम्हारे प्रति कहता हूँ।१। ब्रह्मा-विष्णो! सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव और अनुग्रह यह पाँच जगत के कृत्य हैं, इन्हें नित्य सिद्ध समझो।२। सृष्टि के आरम्भ को सर्ग कहते हैं, उसकी-वृद्धि को स्थिति, नष्ट होने को संहार तथा उद्धार को उत्क्रम कहा है।३। उस

संसार से मोक्ष होने को अनुग्रह कहा है । यही मेरे पंचकृत्य हैं । पृथिवी आदि मेरे इस कृत्य को गोपुर के विम्ब के समान मौन हुये धारण करते हैं ।४। यह सर्गादि चार कृत्य सृष्टि कर्म में प्रविष्ट होते हैं तथा पाचवाँ जो कृत्य मुक्ति का कारण है, वह सदा मुझ में ही स्थित रहता ।५। इसलिये यह पंच-भूतों में मेरे जनों को दिखाई देता है । पृथिवी में सृष्टि, जल में स्थिति तथा अग्नि में संहार है ।६। वायु में तिरोभाव और आकाश में अनुग्रह है । सबकी उत्पत्ति पृथिवी से होती है और जल से वृद्धि होती है ।७।

अदूर्यते तेजसा सर्वं वायुना चापनीयते ।
व्योम्नाऽनुग्रह्यते सर्वंज्ञेयमेव हि सूरिभिः ।८।
पचकृत्य मिद वोढुं ममास्ति मुखपचकम् ।
चतुर्दिक्षु चतुर्वक्त्र तन्मध्ये पंचमं मुखम् ।९।
युवाभ्यां तपसा लब्धमेतत्कृत्यद्वय सुतौ ।
सृष्टिस्थित्यभिधं भाग्य मत्तः प्रीतादतिप्रियम् ।१०।
तथा रुद्रमहेशाभ्यामन्यत्कृत्यद्वय परम्
अनुग्रहाख्यं केनापि लब्धुं नैव हि शक्यते ।११।
तत्सर्वं पौर्विकं कर्म युवाभ्यां कालविस्मृतम् ।
न तद्रुद्र महेशाभ्यां विस्मृतं कर्म तादृशम् ।१२।
रूपे वेषे च कृत्ये च वाहने चासने तथा ।
आयुधादौ च मत्सम्यमस्माभिस्तत्कृते कृतम् ।१३।
मद्धयानवि रहाद्वत्सौ मौढ्यं वामेवमागतम् ।
मज्ज्ञाने सति नैवं स्यान्मान रूपं महेशवत् ।१४।

तेज से सब नाश को प्राप्त होते और वायु में लीन हो जाते हैं तथा आकाश के द्वारा सब पर अनुग्रह होता है, इस प्रकार जानना चाहिए ।८। इन्हीं पंच कृत्यों को धारण करने के मेरे पंच मुख हैं । चारों दिशाओं में चार मुख हैं; तथा पाँचवाँ मुख मध्य में है ।९। हे पुत्रो ! आपने यह कृत्य तप के द्वारा प्राप्त किया है । इसी को सृष्टि की उत्पत्ति और पालन कहा गया है । यह कृत्य मैंने प्रसन्न होकर तुम्हें

प्रदान किया है ।१०। इसी प्रकार अन्य दो कृत्य मैंने रुद्र और महेश को दिये हैं । परन्तु अनुग्रह कृत्य को प्राप्त करने का सामर्थ्य किसी में नहीं है ।११। पूर्व के कर्मों को तुमने समय पाकर भुला दिया है, परन्तु रुद्र और महेश उन कर्मों का विस्मरण नहीं कर सके हैं ।१२। स्वरूप, वेश, कृत्य, आसन, वाहन और आयुध आदिमें हम सब की नितान्त साम्यता थी ।१३। हे सौम्य ! मेरे ज्ञान से तुम विमुख हो गए थे इसलिये अज्ञान छा गया । मेरा ज्ञान रहने पर ऐसा नहीं होगा । इससे ज्ञान और रूप महेश के समान हो जाता है ।१४।

तस्मान्मज्ज्ञानसिद्धचर्थं मंत्रमोंकारनामकम् ।
इतः परं प्रजपतं मामकं मानभंजनम् ।१५।
उपादिशं निज मन्त्रमोंकारमुरुमङ्गलम् ।
ॐकारो मन्मुज्जज्ञे प्रथमं मत्प्रबोधकः ।१६।
वाचकोऽयमहं वाच्यो मन्त्रोऽय हि मदात्मकः ।
तदनुस्मरणं नित्यं ममानुस्मरणं भवेत् ।१७।
अकार उत्तरात्पूर्ण मुकारः पश्चिमाननात् ।
मकारोदक्षिणमुखाद्बिन्दुः प्राङ् मुखतस्तथा ।१८।
नादो मध्यमुखादेवं पञ्चधाऽसौ विजृम्भितः ।
एकीभूतः पुनस्तद्वदोमित्येकाक्षरोऽभवत् ।१९।
नामरूपात्मकं सर्वं वेद भूतकुलद्वयम् ।
व्याप्तमेतेन मंत्रेण शिवशक्त्योश्च बोधकः ।२०।
अस्मात्पञ्चाक्षरं जज्ञे बोधकं सकलस्य तत् ।
अकारादिक्रमेणैव नकारादि यथाक्रमम् ।२१।
अस्मात्पञ्चाक्षराज्जाता मातृकाः पञ्चभेदतः ।
तस्माच्छिरश्चतुर्वक्त्रात्त्रिपाद्गायत्रिरेव हि ।२२।

इसलिए तुम उस ज्ञान का प्राप्ति के लिये 'ओंकार' नामक मन्त्र को जपो । क्योंकि यह मन्त्र अभिमान को नष्ट करने में समर्थ है ।१५। यह निज मन्त्र उपदेश किया है । यह 'ओंकार' मेरे ही मुख से उत्पन्न होने के कारण मेरे रूप का बोधक और महा मङ्गलकारी है ।१६। यह

वाचक है मैं वाच्य हूँ। यह मंत्र मेरा ही आत्मा है। इसके स्मरण करने से मेरा ही स्मरण होता है।१७। उत्तर दिशा वाले मुख से 'अकार' पश्चिम वाले मुख से 'उकार' दक्षिण के मुख से 'मकार' और पूर्व के मुख से बिन्दु की उत्पत्ति हुई।१८। मध्य मुख से नाद उत्पन्न हुआ। इस प्रकार पाँच प्रकार से निकलता हुआ यह सब एक होकर 'ओंकार' रूप एकाक्षर बन गया।१९। यह सब नाम रूप वाला, वेदभूत तथा स्त्री पुरुष भेद से भौतिक शरीर, दो भेद वाला है, इसी मंत्र से व्याप्त तथा शिव-भक्ति का बोध करने वाला है।२०। इस 'ओंकार' से ही पूर्ण विश्व के बाधक प्रणव की उत्पत्ति हुई। अकारादि क्रम से अकार से नकार, उकार से मकार, मकार से 'शि' बिन्दु से 'वा' और नाद से 'य' की उत्पत्ति हुई है।२१। इसी पंचाक्षर से पाँच भेद द्वारा मातृका, आकार से लृकार तक हुई, उससे शिरोमंत्र एवं चार मुखों से त्रिपदा गायत्री प्रकट हुई।२२।

॥ शिव लिंगपूजनदान वर्णन ॥

कथं लिंग प्रतिष्ठाप्यं कथं वा तस्य लक्षणम्।
कथं वा तत्समभ्यर्च्यं देशे काले च केन हि।१।
युष्मदर्थं प्रवक्ष्यामि बुद्ध्यतामवधानतः।
अनुकूले शुभे काले पुण्ये तीर्थे तटे तथा।२।
यथेष्टं लिंगमारोपं यत्र स्यान्नित्यमर्चनम्।
पार्थिवेन तथाप्येनं तैजसेन यथारुचि।३।
कल्पलक्षणसयुक्तं लिंगं पूजाफलं लभेत्।
सर्वलक्षणसंयुक्तं सद्यः पूजाफलप्रदम्।४।
चरे विशिष्यते सूक्ष्मं स्थावरे स्थलमेव हि।
सलक्षणं सपीठं च स्थापयेच्छिवनिर्मितम्।५।
मंडलं चतुरस्रं वा त्रिकोणमथवा तथा।
खट्वांगवन्मध्यसूक्ष्मं लिंगपीठं महाफलम्।६।
प्रथमं मृच्छिलादिभ्यो लिंगं लोहादिभिः कृतम्।
येन लिंगं तेन पीठं स्थावरे हि विशिष्यते।७।

ऋषियों ने पूछा—लिंग की प्रतिष्ठा किस प्रकार करें, उसका लक्षण क्या है ? किस देश काल में उसका किस प्रकार से पूजन करना चाहिए ।१। सूतजी ने कहा—यह सब तुम्हें बताता हूँ । तुम सावधान होकर श्रवण करो। सुन्दर समय हो, पुण्य तीर्थ अथवा तट हो ।२। जहाँ नित्य पूजन हो सके ऐसे स्थान में पूजन करना चाहिए । पार्थिव द्रव्य, जल युक्त अथवा किसी धातु से लिंग निर्मित करावे ।३। शैव शास्त्रों में वर्णित विधानानुसार विधि से लिंग—पूजन का फल प्राप्त करे । क्योंकि सब लक्षणों के सामान्य होने से पूजन फलदायक है ।४। चल मूर्ति छोटी बनानी चाहिए, अचल मूर्ति स्थूल बनावें, फिर सब लक्षण और सिंहासन सहित शिवजी की प्रतिष्ठापना करे ।५। चर का मन्डल अथवा त्रिकोण बनावे और षट्वांग के समान बीच में सूक्ष्म लिंग की चौकी रखे । यह महाफल के देने वाली है ।६। पहिले लिंग मिट्टी, शिला या लौह आदि से बनावे । जिस धातु का लिंग हो, उसी का पीठ होना चाहिए ।७।

लिंगं पीठं चरे त्वकलिगं बाणकृतं विना ।
लिंग प्रमाणं कर्तृणां द्वादशांगुलमुत्तमम् ।८।
न्यूनं चेत्फलमल्पं स्वादधिकं नैवं दुष्यते ।
कर्तुं रेकांगुलन्यूनं चरेऽपि च तथैव हि ।९।
आदौ विमान शिल्पेन कार्यं देवगणर्युतम् ।
तत्र गर्भगृहे रम्मे दृढ़े दर्पणसंनिभे ।१०।
संपूज्य लिंगं सद्याद्यैः षंचस्थाने यथाक्रमम् ।
अग्नौ च हुत्वा बहुधा हविषा सकुलं च माम् ।११।
अभ्यर्च्य गुरुमाचार्यमर्थैं कामैश्च बांधवम् ।
दद्यादैश्वर्यमर्थिभ्यो जडमप्यजड तथा ।१२।
स्थावरं जंगमं जीवं सर्वं संतोष्य यत्नतः ।
सुवर्णपूरिते श्वभ्रं नवरत्नैश्च पूरिते ।१३।
सद्यादि ब्रह्मा चोच्चार्यध्यात्वा देवं परं शुभम् ।
उदीर्य च यहामन्त्रमोंकारं नाद घोषितम् ।१४।

केवल बाण लिंग को छोड़, लिंग पीठ एकत्र ही बनावे तथा लिंग का

परिमाण द्वादश अंगुल का रखे ।८। कम रहेगा तो फल भी थोड़ा होगा। अधिक रहे तो भी कोई दोष नहीं । ग्यारह अंगुल रहे तो भी बाहर के ही समान है ।९। पहिले शिल्प विद्या के द्वारा देवताओं के गण सहित करावे और भीतर के दृढ़ तथा दर्पण के समान प्रकाशित सुन्दर स्थान रखे ।१०। फिर सद्योजातादि मंत्रों द्वारा लिंग-पूजन करे और पूर्वादि दिशाओं के बीच में पूजन कर अग्नि में अनेक प्रकार की आहुति दे ।११। मेरा पूजन परिवार सहित करके गुरु और आचार्य का पूजन करे। अर्थ तथा काम से बन्धुजनों का सत्कार कर गृह, बगीचा तथा गौ का दान करे ।१२। फिर यत्न पूर्वक स्थावर जंगम सब प्राणियों को सन्तुष्ट कर स्वर्ण और नवरत्न से पूरे हुए उस गर्त में सद्योजातादि पाँच तन्त्रों का उच्चारण करे और परम सुभग देव का ध्यान कर ओंकार के नाद से शोधन कर महामन्त्रों का उच्चारण करे ।१३।-१४।

लिंगं तत्र प्रतिष्ठाप्य लिंगं पीठेन योजयेत् ।
लिंगं सपीठं निक्षिप्य नित्यलेपेन बंधयेत् ।१५।
एवं वेरं च संस्थाप्यं तत्रैव परमं शुभम् ।
पंचाक्षरेण वेरं तु उत्सवार्थं बहिस्तथा ।१६।
वेरं गुरुभ्यो गृह्णीयात्साधुभिः पूजितं तु वा ।
एवं लिंगे च वेरे च पूजा शिवपदप्रदा ।१७।
पुनश्च द्विविधं प्रोक्तं स्थावरं जंगमं तथा ।
स्थावरं लिंगमित्याहुस्तरुगुल्मादिकं तथा ।१८।
जंगमं लिंगमित्याहुः कृमिकीटादिकं तथा ।
स्थावरस्य च शुश्रूषा जंगमस्य च तर्पणम् ।१९।
तत्तत्सुखानुरागेण शिवपूजां विदुर्बुधाः ।
पीठमं बामयं सर्वं शिवलिंगं च चिन्मयम् ।२०।
यथा देवीमुमामंके धृत्वा तिष्ठति शंकरः ।
तथा लिंगमिदं पीठं धृत्वा तिष्ठति संततम् ।२१।

फिर उसमें लिंग की स्थापना करे तथा लिंग और पीठ को जोड़कर दृढ़ जोड़नेवाले द्रव्यों को लगा दे। इसी प्रकार वहाँ वेर लिंग की भी

स्थापना करे। पंचाक्षर मन्त्र के द्वारा उत्सवादि के समय वेर को बाहर निकाले ।१५-१६। वेर लिंग को किसी महात्मा या साधु से ग्रहण करे अथवा गुरु से ले। इस प्रकार लिंग और वेर में शिवजी का पूजन शिव पद का देने वाला है ।१७। स्थावर जंगम के भेद से इनके दो प्रकार हैं—तरु या गुल्म आदि के लिंग को स्थावर कहते हैं और कृमि कीटादि को जंगम लिंग कहा गया है। स्थावर की सुश्रूषा जलादि सेंचन और तर्पण जल और अन्न आदि से सन्तुष्ट करना कहा है ।१८-१९। विभिन्न सुख के अनुसार पंडितों ने शिव पूजा विधि कही हैं। पीठ प्रकृतिमयी तथा शिव लिंग ज्ञान स्वरूप माना गया है ।२०। जैसे भगवान् शिव पार्वतीजी को अंक में धारण किये रहते हैं, वैसे ही लिंग भी इस पीठ को धारण किये रहता है ।२१।

एवं स्थाप्य महालिंगं पूजपेदुपचारकैः ।
नित्यपूजा यथाशक्ति ध्वजादिकरणं तथा ।२२।
इति संस्थापयेल्लिंगं साक्षाच्छिवपदप्रदम् ।
अथवा चरलिंगे तु षोडशैरुपचारकैः ।२३।
पूजयेच्च यथान्याय क्रमाच्छिवपदप्रदम् ।
आवाहनं चासनं च अर्घ्यं पाद्यं तथैव च ।२४।
तदंगाचमनं चैव स्नानमभ्यंगपूर्वकम् ।
वस्त्रं गंध तथा पुष्पं धूमदीपनिवेदनम् ।२५।
नीराजनं च तांबूलं नमस्कारो विसर्जनम् ।
अथवाऽध्यादिक कृत्वा नैवेद्यांतं तथाविधि ।२६।
अथाभिषेकं नैवैद्यं नमस्कारं च तर्पणम् ।
यथाशक्ति सदा कुर्यात्क्रमाच्छिवपदप्रदम् ।२७
अथवा मानुषे लिंगेऽप्यार्षे दैवे स्वयंभुवि ।
स्थापितेऽपूर्वके लिंगे सोपचारं यथा तथा ।२८।
पूजोपकरणे दत्ते यत्किंचित्फलमश्नुते ।
प्रदक्षिणनमस्कारः क्रमाच्छिवपदप्रदम् ।२९।

इस प्रकार लिंग को स्थापित कर उपचार पूर्वक पूजन करे। यथा शक्ति नित्य पूजन और ध्वजा आदि का उत्सव करना चाहिये।२२। शिव पद को प्राप्त कराने वाले लिंग का नित्य पूजन करे तथा चरलिंग को षोडश उपचार द्वारा पूजे।२३। यथा विधि पूजन करने से शिवजी का पद प्राप्त होता है। अवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, अङ्ग, आचमन, तैल का अभ्यंग युक्त वस्त्र, गन्ध, पुष्प,धूप, दीप सहित अर्पण करे।२४-२५। नीराजन, ताम्बूल भेंट कर नमस्कार, विसर्जन अथवा नैवेद्य के अन्त तक विधिवत् अर्घ्यादि देकर नैवेद्य, नमस्कार, तर्पण आदि करे तो क्रम पूर्वक शिव पद की प्राप्ति होती है।२६-२७। मनुष्यों या ऋषियों द्वारा स्थापित किये अथवा स्वयं प्रादुर्भूत हुए या नव स्थापित लिंग में उपचार एवं पूजन सामग्री निवेदन करने से जो कुछ फल प्राप्त होता है, वह यहाँ प्रदक्षिणा और नमस्कार करने से ही शिव पद प्राप्त हो जाता है।२८-२९।

लिंगदर्शनमात्रं वा नियमेन शिवप्रदम्।
मृत्पिष्टगोशकृत्पुष्पैः करवीरेण वा फलैः।३०।
गुडेन नवनी तेन भस्मनाऽन्नैर्यथारुचि।
लिंगं यत्नेन कृत्वाऽन्ते यजेत्तदनुसारतः।३१।
अंगुष्ठादावपि तथा पूजामिच्छन्ति केचन।
लिंगकर्मणि सर्वत्र निषेधोऽस्ति न कर्हिचित।३२।
सर्वत्र फलदाता हि प्रयासानुगुणं शिवः।
अथवालिंगदानं वा लिंगमूल्यमथापि वा।३३।
श्रद्धया शिवभक्ताय दत्तं शिवपदप्रदम्।
अथवा प्रणवं नित्यं जपेद्दशसहस्रकम्।३४।
सध्ययोश्च सहस्रं वा ज्ञेयं शिवपदप्रदम्।
जपकाले मकारांतं मनःशुद्धिकरं भवेत्।३५।

नियम पूर्वक शिवजी का दर्शन करने से भी शिवजी का लोक मिलता है। पिसी हुई मिटटी में गोबर मिला कर या कन्नेर के पुष्प अथवा अनेक प्रकार के फल, गुड़ मक्खन भस्म, अन्न अथवा रुचि के अनु-

सार लिंग को यत्नपूर्वक बनाकर उसी के अनुसार भजन करना चाहिए ।३०-३१। इस प्रकार कोई अंगुष्ठ में हीशिवजी का पूजन करते हैं। लिंग का पूजन जहाँ चाहे वहाँ करें, इसका कहीं निषेध नहीं है ।३२। भगवान् शिवजी श्रम के अनुसार ही सर्वत्र फल प्रदान करते हैं अथवा लिंग-दान या लिंग का मूल्य शिव के भक्त को श्रद्धा पूर्वक देने से भी महा फल प्राप्त होता है। शिव के पद की प्राप्ति होती है। अथवा नित्य प्रति 'ओंकार' का दस हजार बार जप करे ।३३-३४। अथवा दोनों सन्ध्याओं में हजार बार जप करने से शिवपद प्राप्त होता है। जप के समय में मकारान्त् अर्थात् ॐ ही मन को शुद्ध कर देता हे ।३५।

समाधौ मानसं प्रोक्तमुपांशु सार्वकालिकम् ।
समानप्रवणं चेदं बिंदुनादयुतं विदुः ।३६।
अथ पंचाक्षरं नित्य जपेदयुतमादरात् ।
संध्ययोश्च सहस्रं वाज्ञे यं शिवपदप्रदम् ।३७
प्रणवेनादिसंयुक्त ब्राह्मणानां विशिष्यते ।
दीक्षायुक्तं गुरोर्ग्राह्यं मंन्त्रं ह्यथ धलाप्तये ।३८।
कुम्भस्नानं मंत्रदीक्षा मातृकान्यासमेव च ।
ब्राह्मणः सत्यपूतात्मा गुरुर्ज्ञानी विशिष्यते ।३९।
द्विजानां च नमः पूर्वमन्येषां च नमोऽन्तकम् ।
स्त्रीणां च क्वचिदिच्छंति नमोतं च यथाविधि ।४०।
विप्रस्त्रीणां नमःपूर्वं मिदमिच्छंति केचन ।
पंचकोटिजपं कृत्वा सदाशिवसमो भवेत् ।४१।
एकद्वित्रिचतुःकोट्या ब्रह्मादीनां पदं व्रजेत् ।
जतेदक्षरलक्षं बा अक्षराणां पृथक्पृथक् ।४२।

समाधि में उपांसु अर्थात् मानसिक जप सर्वकाल में करे तथा बिन्दुलाद युक्त प्रणव सभी कार्यों में एक ही है ।।३६।। अथवा पंचाक्षर मन्त्र नित्य दस हजार बार जप क्षरे। दोनों सन्ध्याओं में हजार-हजार बार जपे तो शिवपद प्राप्त होता है ।३७। पंचाक्षरी मन्त्र में ब्राह्मण को ॐ लमाना चाहिये। फल की प्राप्ति के हेतु गुरु से

दीक्षा लेते हुए मन्त्र ग्रहण करना चाहिये । ।३८। घट स्नान, मन्त्र दीक्षा, मातृका-न्यास तथा सत्य भाषण करने वाला आत्मज्ञानी गुरु ही योग्य समझना चाहिये ।३९। ब्राह्मण 'नमः' को पहले लगावें तथा अन्य वर्ण 'नमः' को पीछे लगावें तथा स्त्रियों के लिये अन्त में 'नमः' लगाने का विधान है ।४०। किसी के मत में ब्राह्मणों की स्त्रियों को भी प्रथम ही उच्चारण करना चाहिये । ॐ 'नमः शिवाय' इस पंचाक्षर का पांच कोटि जप करने से शिवजी के समान हो जाता है ।४१। एक करोड़ जप मे ब्रह्मा, दो करोड़ से विष्णु, तीन करोड़ से रुद्र और चार करोड़ जप करने से महेश का प्राप्त होता है । अथवा मन्त्राक्षरों में से प्रत्येक अक्षर का एक-एक लाख जप करना चाहिये ।४२।

अथवाऽक्षरलक्षं वा ज्ञेयं शिवपदप्रदम् ।
सहस्रं तु संहस्राणां सहस्रेण दिनेन हि ।४३।
जपेन्मंत्रादिष्टसिद्धिर्नित्यं ब्राह्मणभोजनात् ।
अष्टोत्तरसहस्रं वै गायत्रीं प्रातरेव हि ।४४।
ब्राह्मणस्तु जतेन्नित्यं क्रमाच्छिवपदप्रदम् ।
वेदमंत्राश्च सूक्तानि जपेन्नियमास्थितः ।४५।
एकं दशार्णमंत्रं च शतोनं च तदूर्ध्वकम् ।
अयुतं च सहस्रं च शतमेकं विना भवेत् ।४६।
वेदपारायण चैव ज्ञेयं शिवपदप्रदम् ।
अन्यान्बहुतरान्मंत्राञ्जपेदक्षरलक्षतः ।४७।
एकाक्षरांस्तथा मंत्राञ्चपेदक्षरकाटितः ।
ततः पर जपेच्चैव सहस्रं भक्तिपूर्वकम् ।४८।
एवं कुर्याद्यथाशक्ति क्रमाच्छिवपदं लभेत् ।
नित्यं रुचिकरं त्वेकं मन्त्रमामरणांतिकम् ।४९।

अथवा मन्त्र के जितने अक्षर हों उतने ही लाख जप करे तो शिव पद की प्राप्ति होती है । अथवा हजार दिन में दस लाख जप करे ।४३। नित्य-प्रति ब्राह्मण भोजन करावे मन्त्र जप करे, इससे इष्ट पूर्ति होगी । एक हजार आठ गायत्री का नित्य प्रातःकाल जप करे ।४४। इस प्रकार

जप करने से ब्राह्मण क्रम से शिवपद को प्राप्त होता है। वेद के मन्त्रों और सूक्तों का नियमपूर्वक जप करना चाहिये ।४५। मन्त्र का दशार्ण जप अर्थात् दस अक्षर का मन्त्र सौ बार या उससे अधिक हजार, दस हजार के साथ सौ बार जपे ।४६। वेद के परायण से भी शिवपद मिलता है। अन्य अनेक मन्त्र हैं, जिनको जितने अक्षर हों उतने ही लक्ष जप करना चाहिये ।४७। एकाक्षर मन्त्र का जप एक करोड़ बार करे, फिर भक्ति पूर्वक 'ओंकार' का एक हजार बार जप करना उचित है ।४८। इस प्रकार यथा शक्ति जप करने से शिवपद की प्राप्ति होती है। नित्य प्रति जीवन पर्यन्त एक मन्त्र का जप करे ।४९।

सहस्रमोमिति जपेत्सर्वाभीष्टं शिवाज्ञया ।
पुष्पारामादिकं वापि तथा समार्जनादिकम् ।५०।
शिवाय शिवकार्यार्थे कृत्वा शिवपदं लभेत् ।
शिवक्षेत्रे तथा वासं नित्यं कुर्याच्च भक्तितः ।५१।
जडानामजडानां च सर्वेषां भुक्तिमुक्तिदम् ।
तस्माद्वासं शिविक्षेत्रे कुर्यादामरणं बुधः ।५२।
लिंगाद्धस्तशतं पुण्यं क्षेत्रे मानुषके विदुः ।
सहस्रारत्निमात्र तु पुण्यं क्षेत्रं तथार्षके ।५३।
दैवलिंगे तथा ज्ञेयं सहस्रारत्निमानतः ।
धनुःप्रमाणसाहस्रं क्षेत्रे स्वयंभुवि ।५४।
पुण्यक्षेत्रे स्थिता वापी कूपाद्या पुष्कराणि च ।
शिवगंगेति विज्ञेयं शिवस्त वचनं यथा ।५५।
तत्रस्नात्वा तथा दत्वा जपित्वा हि शिवं व्रजेत् ।
शिव क्षेत्रं समाश्रित्य वसेदामरणं तथा ।५६।

'ॐ' को हजार बार जपे तो शिवजी की आज्ञा से सभीकामनाओं की प्राप्ति होती है ।५०। शिवजी के निमित्त पुष्प, उद्यान आदि करे तो शिवपद मिलता है। भक्तिपूर्वक नित्य शिव क्षेत्र में भी निवास करे ।५१। इससे जड़, चैतन्य सभी को मोक्ष मिलता है। इसलिए बुद्धिमान मृत्यु पर्यन्त शिव क्षेत्र में ही निवास करे ।५२। मनुष्यों ने जहां लिंग